इतराती बलखाती ग़ज़लें

रमेश 'कँवल'

SHWETWARNA PRAKASHAN
New Delhi

Published by Shwetwarna Prakashan in Hindi in Paperback as *Itrati Balkhati Gazalen* (First Edition) Authored by *Ramesh 'Kanwal'* in the year 2024.

Shwetwarna Prakashan
212 A, Express View Apartment
Super MIG, Sector 93, Noida-201304, INDIA
Mobile: +91 8447540078
Email: shwetwarna@gmail.com
Website: www.shwetwarna.com

Copyright © *Ramesh 'Kanwal'*

ISBN: 978-81-972908-1-7

Views and opinions expressed in this work are author's own and the facts are reported by the author and the publisher is in no way liable for the same.

All rights reserved.

Book Design by *Sharda Suman*

Cover Design by *Kumar Amit (Zwantum)*

No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without express written permission of the author.

पेंटिंग : राजा रवि वर्मा

या देवी सर्वभूतेषु विद्यारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

स्वर साम्राज्ञी भारत रत्न

लता मंगेशकर

को समर्पित

भारत की राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक एवं गौरव

श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी

को सप्रेम भेंट

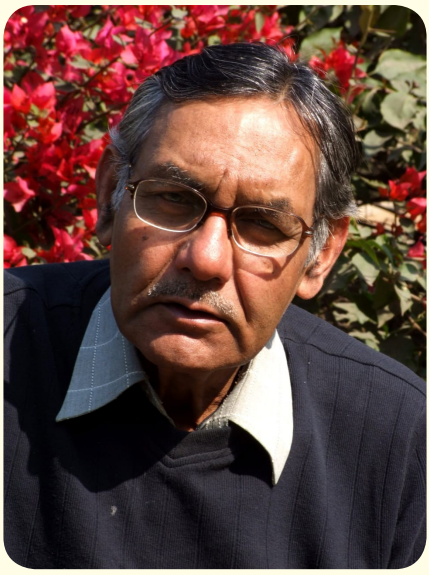

विज्ञान व्रत

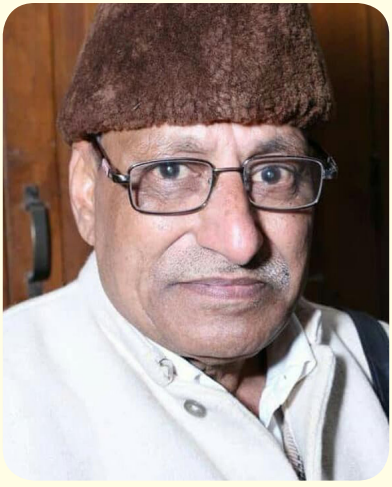

देवेन्द्र माँझी

मंजू प्रसाद/रमेश 'कँवल'

है आपकी नवाज़िश, है आपकी इनायत
सच है 'कँवल' जहाँ में कोई आप सा नहीं है

डॉ. भावना

शुचि 'भवि'

अनुक्रमणिका

- सरस्वती वंदना 15
- आमुख 17
- लुभाती और गुदगुदाती ग़ज़लें 24
- सहज, सरल और नायाब ग़ज़लों का गुलदस्ता है 27
- काफ़ियों के पहरे में शे'रियत बरसती है 32
- कुछ बात मेरी भी - रमेश 'कँवल' 35

1. छोड़ कर यह गयीं जहाँ फ़ानी 37
2. मैं अपने होंठों की ताज़गी को तुम्हारे होंठों के नाम लिख दूँ 38
3. मुझसे मिल के वो क्यों इतना गदगद हुआ 39
4. रिश्तों में पहले जैसी तमाज़त नहीं रही 40
5. तुम्हारे लफ़्ज़ों को भावनाओं की पालकी में बिठा रहा हूँ 41
6. गगन धरती की मैं हलचल रहा हूँ 42
7. कुर्सियाँ हैं कहाँ फैला अख़बार है 43
8. शह्र से लाज का अपहरण हो गया 44
9. सवाल आँखों से कर रहा हूँ, जवाब पलकों से दे रही है 45
10. दिल का मकान ग़म ने किराये पे ले लिया 46
11. रात दिन उसको सोचना क्या है 47
12. गुलबदन पर निखार का मौसम 48
13. तुम्हारी यादों का सिलसिला हो 49

14. धर्म संसद में हुईं जब गालियाँ 50
15. हर जगह उनका नाम है साहिब 51
16. रिश्तों को मिस्मार किया 52
17. रंग उसका उड़ गया 53
18. जलसों में झूठा बोले 54
19. हर शह्र गाँव क़स्बे पे यूँ मेहरबां हुआ 55
20. समुन्दर में बेचैन हैं मछलियाँ 56
21. नाम यश डिग्री पता मान गए 57
22. मौज में आज थी जलपरी 58
23. दोस्त आओ तो सही 59
24. आपका जो ख़त पढ़ा 60
25. ऑनलाइन ग़म दिखा 61
26. घटाकर वो क़ीमत बताता रहा 62
27. उजाले बांटने जो चल पड़े हैं 63
28. आँखों से इस्कैन किया 64
29. हौसलों के नगर में रहे 65
30. मौत की दहशत छाई है 66
31. आँखों से कुछ छुपा नहीं रहता 67
32. मेरी ग़ज़लों की है रानी जो, उसकी बात ही क्या है 68
33. डूबने वालों में उसका नाम है 69

34. लमहाते-शाख़े-वक़्त ने क़ादिर बना दिया 70

35. कैसी बंदिश है कोई भी पसे-मंज़र न लिखे 72

36. दरख़्त फूल समर डाली शादमाँ देखूं 73

37. जिसे हमने फेंका उठाया भी है 74

38. फ़्लैट पर धूप आती नहीं 75

39. मेरे सर की क़सम खाने लगा है 76

40. आग पानी के आस-पास रही 77

41. पलक झुकाकर हामी भर 78

42. मदिरा छलकाने आई 79

43. लफ़्ज़ बरते गए सलीक़े से 80

44. कर्फ़्यू लगा है रात में बाहर न जाइए 81

45. चाँद हुआ जब रिश्तेदार 82

46. बारिश में भीगते हुए पास आया चल दिया 83

47. जिस तरफ़ सब गए 84

48. ठुकराओगे तो सोच लो पछताओगे बेशक 85

49. चार दिन की ज़िन्दगी में एक दिन भाया उन्हें 86

50. किनारे खड़ा था भला आदमी 87

51. अब कोई वहशतो-दहशत के ये मंज़र न लिखे 88

52. मेरी आँखों में आ गए आँसू 89

53. मसअला कोई सरल हो ये कहाँ मुमकिन है 90

54. गमले में तुलसी जैसी उगाई है ज़िन्दगी 91

55. इस दौर के भारत का अंदाज़ अनूठा है 92

56. मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली 93

57. तेरी यादों के दस्तावेज़ अल्बम से निकल आए 94

58. बेटी पर सख्ती, बेटे को मस्ती के अधिकार मिले 95

59. दाल रोटी और दवाई के सिवा क्या चाहिए 96

60. फ़ाइव जी की ही चल रही है हवा 97

61. तब्लीग़ी जमाती भला जाहिल नहीं होंगे 98

62. मुहब्बतों के सफ़र में थकान थोड़ी है 99

63. मज़दूरों के लिए कोई लारी न आएगी 101

64. करोना ने जमकर मचायी तबाही 102

65. अन्दर इक तूफ़ान सतह पर ख़ामोशी का पहरा था 104

66. उसकी सारी ख़ूबियाँ ख़ुद जलवागर करता रहा 105

67. जामुन की शाख़ पर कभी झूला न डालिए 106

68. इश्क़ का आँगन इधर गुलज़ार है 107

69. ज़हन की शाख पर ख़्वाब फलते रहे 108

70. ज़िन्दगी में मेरी ताज़गी आ गयी 109

71. वो जो घर था, तुम से ही था वो घर, तुम्हें याद हो कि न याद हो 110

72. उसे शुहतों की हवा लगी, तभी चार दिन में बहक गया 112

73. वो रह-रह के अब याद आने लगे हैं 113

74. रेत में कोई धार पानी की 114
75. शुक्रिया 115
76. मौन हो 116
77. हट उधर चल 117
78. न चुप रह 118
79. चले आओ 119
80. मेरे हमसफ़र 120
81. चल बात कर 121
82. करुं न गिला 122
83. फ़िक्र मेरी ले के शुहरत पा रहा है 123
84. होंठों पर पहरे हैं 124
85. तन की हसरत में अब उबाल नहीं 125
86. ठोकर में डाल कर ये ज़माने की दौलतें 126
87. दस्ते-क़ातिल बेहुनर है आजकल 127
88. कौन चाहेगा तुम्हें आफ़ात में 128
89. पहरे मंदिर पर देखो 129
90. जी हुज़ूरी करो 130
91. प्रश्न हूँ मैं, हल नहीं हूँ 132
92. आँखों से जब दूर हुआ 133
93. जब से वो बाज़ार गया 134

94. हमने सुख निर्यात किया 135
95. बड़ी आसान क़िस्तों में चुका है 136
96. दीवारों में दर होता है 137
97. भूल जाओ गया सो गया 138
98. दर्द की धुन पर ग़ज़ल है 139
99. मुझको निहारते रहे सामान की तरह 140
100. एक पल नहीं लगता उनको रूठ जाने में 141
101. ऋतुओं का है राजा बसंत 142
102. 'इतराती बलखाती ग़ज़लें' की ग़ज़लों की बह्रें और उनके अर्कान 144
103. यू ट्यूब पर ग़ज़लों और भजनों के वीडियो 155
104. मुहब्बतों का शायर : रमेश 'कँवल' 157

सरस्वती वंदना

1.

हँसवाहिनी माँ की जय जय
वीणावादिनी जय हो
शुभ्रज्योत्स्ना भरो हृदय में
अन्धकार सब क्षय हो
पद्मासना श्वेत वस्त्रा माँ
तेरी जय जय जय हो

2.

पुलकित ज्ञान ज्योति में
मेरी सद्बुद्धि की लय हो
ज्ञानदायिनी तब प्रकाश में
मेरा तिमिर विलय हो
कमल आसनी वागीश्वरी माँ
तेरी जय जय जय हो

3.

तेरे चरणों की पावन रज
मस्तक मेरे सोहे
धूप दीप नैवेद्य सुधा से
अर्चन वंदन होवे
बुद्धि वर्धिनी अमृतमयी माँ
तेरी जय जय जय हो

4.

ज्योतिर्मय शुभ जल प्रपात से
ज्ञान पुंज नित बरसे
नित उड़ान हो नयी सफलता
से प्रतिदिन मन हरसे
कृपा सिंधु माँ तेरी जय जय
तेरी जय जय जय हो

5.

वरदहस्त हो मेरी क़लम पर
मम सौभाग्य उदय हो
दुख अभाव सबके हर लो माँ
इन पर विश्व विजय हो
ताल-छंद गति लय पर जय हो
माँ तेरी जय जय हो

हँसवाहिनी माँ की जय जय
वीणावादिनी जय हो
पद्मासना श्वेत वस्त्रा माँ
तेरी जय जय जय हो

आमुख

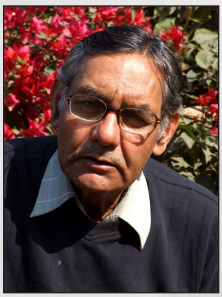

शाइर मूलत: संवेदनशील होता है। अत: उसके आस-पास के परिवेश में घटित होने वाली घटनाएँ उसके मानसिक क्षितिज पर उभरकर विभिन्न रूपों में परिलक्षित होती रहती हैं। उसकी शाइरी वस्तुत: उसकी संवेदनशीलता का ही प्रतिफलन है। शब्दों में निबद्ध शाइर की भाव भंगिमा ही प्रस्तुत संग्रह 'इतराती बलखाती ग़ज़लें' की ग़ज़लों में विविधवर्णी परिधानों से सुसज्जित होकर संग्रह के पृष्ठों पर अवतरित हुई हैं।

प्रस्तुत संग्रह का अवगाहन करते हुए मैंने स्पष्टत: यह अनुभव किया कि ग़ज़लगोई मात्र लफ्फ़ाज़ी या तुकबंदी नहीं है। ग़ज़ल न तो अख़बार है न ही प्रवचनों का पुलिंदा।

रमेश 'कँवल' अपनी ग़ज़लों में किसी भाषा विशेष में निष्णात होने का ढोल पीटते नज़र नहीं आते अपितु एक ऐसी ज़ुबां को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं जो कि आम फ़हम है। यद्यपि रमेश 'कँवल' की ग़ज़लों में अरबी-फ़ारसी शब्दों का बाहुल्य दिखलाई देता है परन्तु इन्टरनेट, पेट्रोल, टेंशन, मास्क, सैनीटाइज़र, कोरोना जैसे अंग्रेजी के शब्दों का इस्तेमाल भी गाहे-बगाहे दृष्टिगत होता है। इसके अतिरिक्त इनकी ग़ज़लों में वातावरण, अपहरण, मरण, क्षरण, ध्यान और भारतवर्ष जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग भी यथास्थान प्राप्य है। एक बहुपठ और बहुश्रुत रचनाकार के लिए ही यह संभव है।

रमेश 'कँवल' अपने ग़ज़ल संग्रह का श्रीगणेश सरस्वती वंदना से करते हैं। उनके लिए सरस्वती वंदना मात्र औपचारिकता नहीं है बल्कि इस रचना में सार्थक शब्द चयन रमेश 'कँवल' के वैदुष्य का साक्ष्य भी है। वाग्देवी की इस वंदना में उनके भावों का टटकापन तथा शब्दों का सटीक और शालीन प्रयोग शाइर के गाम्भीर्य और शब्द ज्ञान का परिचायक है:

ज्योतिर्मय शुभ जल प्रपात से
ज्ञान पुंज नित बरसे
नित उड़ान हो नयी सफलता
से प्रतिदिन मन हरसे
कृपा सिंधु माँ तेरी जय जय
तेरी जय जय जय हो

रमेश 'कँवल' ज़मीन से जुड़े शाइर हैं। अत: उनकी शाइरी का कथ्य भी आम आदमी और उसकी ज़मीनी ज़रूरतों के आस-पास ही नज़र आता है:

अब बज़ट ले उड़ा ग़रीबों से
उनके सब्रो-क़रार का मौसम

जिसे हमने फेंका उठाया भी है
ग़रीबी ने ये दिन दिखाया भी है

स्वयं रमेश 'कँवल' इस जज़्बे को बहुत गहराई से महसूस और आत्मसात करते हुए नज़र आते हैं:

गगन धरती की मैं हलचल रहा हूँ
युगों से सूर्य बन के जल रहा हूँ

या फिर-

आग-पानी के आस-पास रही
बदहवासी मेरा लिबास रही

भारत की ओलंपियन और भारोतोलन में रजत पदक जीतने वाली वेटलिफ्टर मीरा बाई चानू की ऐतिहासिक उपलब्धि को शाइरी में ढालते हुए रमेश 'कँवल' का अंदाज़े-बयां तो देखिये:

'मीराबाई चानू' ख़ुश
सिल्वर मैडल 'कँवल' मिला

हर शाइर का अपनी बात कहने का एक ख़ास अंदाज़ होता है। रमेश 'कँवल' का लहजा मख़सूस और मुख्तलिफ़ होने के साथ साथ नायाब भी है:

दिल का मकान ग़म ने किराये पे ले लिया
ख़ुशियाँ जो मुस्तक़िल थीं उन्हें बेदख़ल किया

सवाल आँखों से कर रहा हूँ, जवाब पलकों से दे रही है
ख़मोशियों की मुहर लगाकर, शराब नज़रों से दे रही है

सच है कि खुल के अपनी अदावत नहीं रही
पर साथ-साथ रहने में लज़्ज़त नहीं रही

हो गया आँसू से तर
फूल तकिये पर कढा

अक्सर यह देखा जाता है कि शाइर अपनी ग़ज़लों में प्रवचन का काढ़ा पिलाते नज़र आते हैं। रमेश 'कँवल' के यहाँ प्रवचन का नहीं अपितु हिदायत/परामर्श का स्वर मुखर है:

फॉलोवर घटने लगे हैं आपके
अब बदलिए आप अपनी नीतियाँ

हरगिज़ बुरे दिनों से न घबराइए 'कँवल'
ज़ेवर ज़मीर का किसी सूरत सँभालिये

दफ़्तर के दरवाज़े पर
टेंशन छोड़ के, आओ घर

जामुन की शाख़ पर कभी झूला न डालिए
उस महजबीं के प्यार को दिल से निकालिए

रहे-इश्क़ है
बड़ी पुरख़तर

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ शाइरों और आलोचकों की नज़र में नज़्म के शाइर हैं किन्तु उनकी ग़ज़लें भी बेहद नायाब हैं। मैंने बहुत पहले उनका एक शे'र सुना था-

गुलों में रंग भरे बादे-नौबहार चले
चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले

कारोबार शब्द का इतना सटीक और खूबसूरत प्रयोग शायद ही कहीं मिले। इतने दिनों बाद अब यही शब्द रमेश 'कँवल' के यहाँ बरामद हुआ। एक खूबसूरत अंदाज़ और नायाब लहजे में। रमेश 'कँवल' जैसे कद्दावर शाइरों को ही यह कमाल हासिल है:-

हमने कर के प्यार 'कँवल'
ग़म का कारोबार किया

अक्सर यह देखा जाता है कि जब शाइर 'वर्णनात्मक लहजा' अख्तियार करता है तो वह सपाटबयानी का शिकार हो जाता है लेकिन एक स्ट्रेट स्टेटमेंट को शे' र के पैकर में ढालने का हुनर कोई रमेश 'कँवल' से सीखे:-

कर्फ़्यू लगा है रात में बाहर न जाइए
फ़ुटपाथ जिनका घर हो उन्हें क्या बताइये

करोना ने जमकर मचायी तबाही
इलाही, इलाही, इलाही, इलाही

नायिका की देहयष्टि और उसकी रूप-राशि का शब्दों में चित्रांकन की एक बानगी आपको दिखाना चाहता हूँ:-

पहली बार मिले थे जब वे रूप 'कँवल' था मनमोहक
लब, गेसू थे मस्त, अदाएँ क़ातिल, बदन छरहरा था

साफ़गोई आसान कार्य नहीं है। अपनी बात को साफ़ साफ़ बयां करने के लिए शाइर में ईमानदारी के साथ साथ साहस भी हो तो बात बनती है। अपनी बात को गोल मटोल या लच्छेदार में नहीं अपितु सीधे सीधे कहने का जो अंदाज़ और लहजा रमेश 'कँवल' के यहाँ उपलब्ध है वह बहुत विरल है:-

निज़ामे मुस्तफ़ा की क़ब्र पर ध्वज
'कँवल' भगवा का लहराने लगा है

तब्लीग़ी जमाती भला जाहिल नहीं होंगे
क्या लोग ये इंसान के क़ातिल नहीं होंगे

मस्जिद से अज़ाँ देंगे पुकारेंगे ख़ुदा को
लेकिन ये वतन के लिए हामिल नहीं होंगे

ज़िन्दगी शब्द को रदीफ़ बनाकर एक नज़्म के स्टाइल में शाइरी करते हुए रमेश 'कँवल' का यह अंदाज़ भी ज़रा ग़ौर फ़रमाएं:-

गमले में तुलसी जैसी उगाई है ज़िन्दगी
पूजा है, अर्चना है, दवाई है ज़िन्दगी

जब से हुआ है प्रेम की ज़ुल्फ़ों में क़ैद वो
उसके लिए ग़मों से रिहाई है ज़िन्दगी

रहीम का एक बहुत ही प्रसिद्ध दोहा है तथा बहुत से कवियों ने इस तथ्य को अपनी अपनी तरह से कहा है मुलाहिजा फरमाए:

लीक लीक गाडी चले, लीकन चले कपूत
लीक छांड तीनों चले, शायर, सिंह, सपूत

अब रमेश 'कँवल' चूँकि शाइर हैं तो लीक लीक भला क्यों चलेंगे! वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं:-

जिस तरफ़ सब गए
हम उधर कब गए

अपना पक्ष रखने में रमेश 'कँवल' कभी नहीं चूकते। वे निडर होकर बेबाक अंदाज़ में अपनी बात कहते हुए दिखाई देते हैं-

एक से एक मिले मुल्क को रहबर अब तक
राहबर कोई 'अटल' हो ये कहाँ मुमकिन है

थी क़यादत मोदी की जग को 'कँवल'
राह भारतवर्ष ने आसान ली

यह रमेश 'कँवल का ही बूता और साहस है कि उन्होंने किसी तथाकथित मंचीय शाइर को उसकी बदतमीजी के लिए बेहद सख़्त और तल्ख़ लहजे में जवाब दिया। ग़ज़ल का मतला तो थोडा रूमानी है लेकिन ग़ज़ल के कई अशआर उस तथाकथित शाइर के मुँह पर झन्नाटेदार तमाचे हैं:-

मोहब्बतों के सफ़र में थकान थोड़े है
तेरे बग़ैर ये मौसम जवान थोड़े है

तुम्हारा ख़ून तो शामिल नहीं गुलिस्तां में
लुटेरों के लिए हिंदोस्तान थोड़े है

शिवाजी, तेग़ के, राणा के हम भी हैं वंशज
तुम्हारे ख़ून में ही ये उफ़ान थोड़े है

इतना सब होने के बावजूद रमेश 'कँवल' प्रेम और रुमान के शाइर हैं। दाम्पत्य और प्रेम संबंधों पर उनके इस शे'र में आपके दिल की धड़कने अवश्य स्पंदित होंगी:-

एक पल नहीं लगता उनको रूठ जाने में
हमको पहरों लगते हैं फिर उन्हें मनाने में

मुझे पूर्ण विश्वास है कि रमेश 'कँवल' जैसे सिद्धहस्त शाइर के ग़ज़ल संग्रह– 'इतराती बलखाती ग़ज़लें' की ग़ज़लें सुधी पाठकों से प्रचुर प्रशंसा प्राप्त करेंगी और शाइरी की दुनिया में नए आयाम उपस्थित करेंगी।

मेरी शुभकामनाएं तो रमेश 'कँवल' जी के साथ हैं ही!

शुभास्ते सन्तु पन्थान:!!

10 मई, 2022

विज्ञान व्रत

एन-138 सेक्टर-25 संपर्क: 981 022 4571

नॉएडा 201301 (योगी प्रदेश)

लुभाती और गुदगुदाती ग़ज़लें

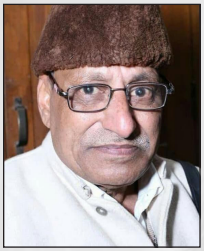

'इतराती बलखाती ग़ज़लें' कवि/शाइर रमेश कँवल की 101 रचनाओं का संग्रह है, जो आपके हाथों में पहुँचने के लिए बेताब है। जबसे सोशल मीडिया का विकास हुआ है, फ़ेसबुक और वाट्सएप का ज़माना आया है, तब से ग़ज़ल के आशिक़ों की तादाद में भी आशातीत वृद्धि हुई है। यह एक सुखद संयोग है, इसमें ग़ज़ल कहने/लिखने वालों की संख्या भी बढ़ी है और उन्हें अपनी रचनाएँ जनसामान्य तक पहुँचाने के अवसर भी मिले हैं। अतः वर्तमान में ग़ज़ल-क्षेत्र में सोशल मीडिया की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। ख़ैर हमें सोशल मीडिया की नहीं कवि/शाइर रमेश 'कँवल' की ग़ज़लों पर बात करनी है।

कवि/शाइर रमेश कँवल ने अनेक विषयों पर अपनी पैनी नज़र रखते हुए उन्हें अपनी क़लम-कूची से चित्रात्मक रूप देने का प्रयास किया है, और इसमें वे काफ़ी हद तक सफल भी रहे हैं। उदाहरण के लिए उनका यह शे'र देखिए–

अँधेरे के फ़साने से हूँ वाक़िफ़
दिया हूँ शाम से ही जल रहा हूँ

कवि/शाइर स्वभावतः हर चीज़ पर पैनी दृष्टि रखता है, अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाता है, इसी बात को रमेश कँवल ने बहुत ख़ूबसूरती से अपने शे'र में पिरो दिया है।

कवि जब सब पर पैनी दृष्टि रखता है तो कहीं भी कुछ बलात् या अनुचित होता है तो रचनाकार उसे बर्दाश्त नहीं कर पाता, उसके विरुद्ध अपनी आवाज़ अवश्य बुलन्द करता है। विषय मूल अधिकारों से जुड़ा हो तो और भी गम्भीर हो जाता है, तभी तो इसकी गम्भीरता को समझते हुए शाइर की क़लम पूछ बैठती है–

हक़ एक सा सभी का है जल-वायु-भूमि पर
कैसे जनाब नाम पर अपने लिखा लिया

अर्थात् आप दूसरों के मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण क्यों और कैसे कर रहे हैं। बहुत ही मासूमियत और सुन्दरता से कवि ने उक्त अनियमितता के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद कर दी। इस स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए रचनाकार वाक़िई बधाई का पात्र है।

फ़ारसी भाषा की एक पुरानी कहावत है कि पीछे मुड़कर देखोगे तो पत्थर के हो जाओगे अर्थात् अगर हम अपने भूतकाल के झरोखे से झाँकते हुए यही सोचते रहेंगे कि हम कभी ऐसे थे, ये थे, वो थे तो हम भविष्य का आईना नहीं देख पायेंगे और हम आगे बढ़ते और निरन्तर बढ़ते समय समाज से बहुत पीछे छूट जायेंगे, तब पछतावे के अतिरिक्त हमारे हाथ कुछ और नहीं आएगा। इसी बात को अपने शब्दों में कवि रमेश 'कँवल' बहुत ही ख़ूबसूरती से कुछ यूँ कहते नज़र आते हैं–

रात-दिन उसको सोचना क्या है
यादे-माज़ी में अब रखा क्या है

कवि का सीधा और स्पष्ट सन्देश है कि भूतकाल को देखना छोड़कर भविष्य के आईने में देखिए, तभी विकास संभव हो सकेगा।

प्रस्तुत संग्रह का शाइर बहुत आशावादी भी है। वह कहता है आशावादी हों तो अपने कर्म के दम पर हम अपनी मंज़िल को पा सकते हैं। किसी संकट या विपत्ति में निराश होने की बजाय आस-ओ-उम्मीद का दामन थामे रखेंगे तो अवश्य ही हमें अपनी मंज़िल मिल जाएगी, तब हमें किसी की स्तुति, प्रार्थना करने की आवश्यकता नही होगी। देखिए शाइर की क़लम का कमाल–

बुरे हैं दिन तो निराश मत हो
दुआएँ कर आगे दिन भला हो

यहाँ रचनाकार का 'दुआ' शब्द से आशय ईश-स्तुति या प्रार्थना के साथ-साथ कर्म और आशावाद से भी है। बहुत ख़ूबसूरत शे'र हो पाया है यह।

जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसे अर्जित तो किया जाये मगर इसके पीछे पागलपन की सीमा तक न दौड़ा जाए,

क्योंकि धन ही सब-कुछ नहीं है, जीवन में ऐसा भी बहुत-कुछ है जो धन से नहीं लिया जा सकता–-ऐसे आध्यात्मिक विचार को शाइर रमेश 'कँवल' बहुत ही सहजता से कह जाता है–

चन्द साँसें ख़रीद भी न सके
धन का ऐसा निज़ाम है साहिब

इसी ग़ज़ल में आगे आगे एक अन्य शे'र के माध्यम से शायर यह सन्देश देने में सफल रहा है कि हमेशा ज्ञान और रौशनी की ही जय-जयकार होती है, अंधेरा और अज्ञानता हमेशा गुलामी की पीड़ा सहते हैं अर्थात् बेबस और असहाय रहते हैं। आप भी देखिये–

बादशाहत है चाँद-तारों की
रात तो बस ग़ुलाम है साहिब

ऐसे अनेक अश्आर इस संग्रह में हैं, जिनका सविस्तार यहाँ उल्लेख किया जा सकता है लेकिन स्थानाभाव की विवशता है। इसके साथ ही मैं यह भी चाहता हूँ कि पाठक-वर्ग इस संग्रह को पढ़कर इसके अश्आर के अपने मतलब निकाले, मेरे द्वारा प्रदर्शित अर्थों के आईने में ही न भटकें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संग्रह साहित्यिक-जगत् में अपना एक विशेष स्थान बनायेगा और पाठक-वर्ग इसका भरपूर स्वागत करेगा।

शुभ कामनाओं सहित–

देवेन्द्र माँझी
ए-402, श्री राधाकृष्णन ग्रुप हाऊसिंग सोसायटी,
प्लॉट नं-23, सेक्टर-7, द्वारका, नयी दिल्ली-110075
मोबाइल-9810793186

सहज, सरल और नायाब ग़ज़लों का गुलदस्ता है

रमेश 'कँवल' ग़ज़ल की दुनिया के सुपरिचित नाम हैं। रमेश कँवल का मूल नाम रमेश प्रसाद है। एक तरफ़ रमेश प्रसाद बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, वहीं रमेश 'कँवल' के जीवन में सेवानिवृत्ति संभव नहीं। दरअसल एक रचनाकार अपने अंतिम सांस तक कुछ न कुछ नया सिरजता रहता है। एक अजीब तरह की प्यास और अकुलाहट उसे चैन से रहने नहीं देती और रात के अँधेरे में अनायास टूटती उसकी नींद किसी शे'र के आमद की खबर देती है। यही आमद का शे'र रमेश प्रसाद को रमेश 'कँवल' बना देता है। यूँ तो रमेश 'कँवल' की अब तक प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह में लम्स का सूरज (उर्दू) सावन का कँवल (हिंदी)1997, शोहरत की धूप (हिंदी) 2013, रंग-ए-हुनर (उर्दू) 2016, स्पर्श की चांदनी (ग़ज़ल और नज्म संग्रह), 2019 इनके मौलिक काव्य संग्रह हैं। इनके अलावा अक़ीदत के फूल (2020), 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें, (2021)और 21वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन गज़लें इनके संपादित ग़ज़ल संग्रह हैं। इनकी गज़लें रंगारंग शायरी, ग़जल इंटरनेशनल, ग़जल दुष्यंत के बाद भाग 2, बिहार में जदीद ग़ज़ल, 101 किताबें ग़ज़लों की, संदल सुगंध भाग 4, हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज तथा यह समय कुछ खल रहा है इत्यादि साझा संग्रहों में सम्मलित हैं। इनके अलावा भी इनकी गज़लें कविता कोश, उर्दू यूथ फोरम डॉट ओआरजी और रेख्ता पर भी पढ़ी जा सकती हैं।

संग्रह में सिर्फ़ विरह-मिलन का दास्तान नहीं बल्कि सामाजिक, राजनैतिक, बाज़ारवाद, मानवीय संवेदनहीनता तथा व्यवस्थागत विसंगतियाँ भी पूरी मजबूती से उभर कर आई हैं।

प्रतीकों और बिम्बों के साथ ग़ज़ल अपने कहन में ख़ूब निखरती है। रमेश 'कँवल' प्रतीकों और बिम्बों के चयन में महारत हासिल किए हुए हैं। आजकल सच

का सूरज बड़े-बड़े दफ्तरों में क़ैद है। स्वभाविक है, चारों ओर घुप्प अंधेरी रात ही तो होगी। शायर जब इस सच को एक अलग लहजा में अभिव्यक्त करता है, तो उसका संप्रेषण मारक हो जाता है। शे'र देखें-

उनके दफ़्तर में सूरज रहा क़ैद जब
कालिमा का घरों में वरण हो गया

प्रेम ग़ज़लकारों का प्रिय विषय रहा है। प्रेम लिखते वक़्त ज़्यादातर शायर दोहराव का शिकार हो जाते हैं। प्रेम एक शाश्वत सत्य है, जिसकी अनुभूति कमोबेश सभी को एक समान होती है। पर अभिव्यक्ति ही इसे अन्य शायरों के कथ्य से अलग करती है। किसी ऐसे लफ़्ज़ से अपने प्रेमी या प्रेमिका को बुलाना जिसे गूगल तक को पता नहीं हो, प्रेम को दुनिया से छुपाने का प्रयास ही दिखाता है। कहा जाता है कि इश्क़ और मुश्क़ छुपाए नहीं छुपते। परन्तु शायर इस शे'र में बहुत ही मासूम तरीके से अपने प्रेम को छुपाना चाहता है।शेर देखें-

पता न गूगल को लफ़्ज़ हैं जो, पुकारती है उन्हीं से मुझको
ज़माना जिसको समझ न पाए, वही इशारों से दे रही है

रमेश 'कँवल' जब प्रेम लिखते हैं तो, लगता है जैसे प्रेम जी रहे हों। उनका प्रेम कबूतर द्वारा चिट्ठी पहुंचा कर परवान नहीं चढ़ता बल्कि व्हाट्सएप के डीपी बदलने और चैट करने के साथ आगे बढ़ता है।

शे'र देखें-

चैट किया, डीपी बदली
बात कहाँ इक बार किया

सुख-दुख जीवन के दो पहलू हैं। जिस तरह दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का आना तय है। उसी प्रकार सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख का आना भी चलता रहता है।सुमित्रानंदन पंत ने कभी अपनी कविता में इसी बात को इस तरह से कहा था कि 'सुख-दुख के विरह मिलन से यह जीवन हो परिपूर्ण'। शायर सकारात्मकता को जीवन का आधार मानता है। शे'र देखें-

बुरे हों दिन तो निराश हो मत
दुआएँ कर आगे दिन भला हो

जीवन और मृत्यु हमारे अधीन नहीं हैं। यह सच कोरोना वायरस के फैलने के समय बहुत प्रमाणिकता के साथ सबके जीवन में घटित हुआ। चारों तरफ़ मृत्यु का हाहाकार मचा हुआ था। लोगों के लाश जलाने के लिए श्मशान भी कम पड़ रहे थे।सारे पैसे बैंकों में पड़े रह गए। प्रकृति के इस रौद्र रूप के सामने सारी व्यवस्था धरी की धरी रह गयी। शे'र देखें-

चंद साँसें ख़रीद भी न सके
धन का ऐसा निज़ाम है साहिब

कोरोना काल में सभी को इम्यूनिटी और योग का ध्यान आया। भागती-दौड़ती ज़िंदगी जब अचानक थम गई तब हमें एहसास हुआ कि ख़ुद का ध्यान रखना कितना ज़रूरी है। शे'र देखें-

भाप ली काढ़ा हमने पिया
ख़ौफ़ के हम असर में रहे

किसी भी महामारी में सामाजिक दूरी इसके चेन को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शायर की पैनी दृष्टि न केवल यथास्थितिवाद को दर्शाने में है बल्कि उससे बचने का उपाय भी बताना उन्हीं की ज़िम्मेदारी है। शे'र देखें-

कोविड हो डेल्टा हो कि हो ओमिक्रोन ये
मेहमां बना के इनको न घर पर बुलाइए

रमेश 'कँवल' छोटी बह्रों में भी कमाल की शायरी करते हैं। ज़्यादातर लोग जब ऊंचे ओहदे पर होते हैं तब तक उनकी शोहरत होती है।वह ओहदा ख़त्म होते ही उनकी ज़िंदगी साधारण इंसान-सी हो जाती है। ये शे'र देखें-

नाम यश डिग्री पता मान गए
रफ़्ता-रफ़्ता सभी पहचान गए

मेरी शोहरत भी गई
जब मेरा ओहदा गया

हालांकि शायर इसका अपवाद है। उनकी शोहरत ओहदा जाने के बाद और ज़्यादा बढ़ गई है।

आगे शायर कहता है कि जहाँ कर्फ़्यू में झूठ की गश्ती लगी हुई है, वहाँ सच की दुकान खोलने की हिम्मत कोई कैसे कर सकता है? शे'र देखें-

झूठ की गश्ती कर्फ़्यू में
कौन दुकां सच की खोले

रिश्तों का खोखलापन आज के समाज की कड़वी सच्चाई है। छोटी-छोटी बातों पर रिश्ते टूट जाते हैं। सहनशक्ति सिरे से ग़ायब है। सीधे-सीधे कहो तो लोग short-tempered हो गए हैं। ऐसे में यह शे'र देखें-

जम के बैठे रहे रंजो-ग़म
जल्द चल दी, न ठहरी ख़ुशी

21वीं शताब्दी में भी ग़रीबी हमारे देश की कड़वी सच्चाई है। एक तरफ़ जहाँ अमीर अपने पालतू कुत्तों पर हज़ारों खर्च कर देते हैं, वहीं ग़रीब अपने बच्चों की ख़्वाहिश पूरी करने में भी असमर्थ होते हैं। एक रचनाकार इस व्यवस्था को किस तरह शे'रों में ढालता है। ज़रा देखें-

खिलौने पे बच्चे मचलते रहे
पिता भी विवशता छुपाता रहा

रमेश 'कँवल' अपना जीवन बहुत सकारात्मक तरीके से बिताते हैं। जीवन भले सुख-दुख की धूप छाँह हो, पर है बहुत ख़ूबसूरत। शायर रमेश 'कँवल' को इस ख़ूबसूरती से प्यार है और यही होना भी चाहिए। शेर देखें-

ख़ूबसूरत है यक़ीनन ज़िन्दगी
हां! 'कँवल' को ज़िन्दगी से प्यार है

इस संग्रह से गुज़रते हुए हर पल संग्रह की सहज, सरल और स्वाभाविक ग़ज़लें आपको प्रभावित किए बग़ैर नहीं रहतीं। इनकी ग़ज़लें अनुभूतियों, संवेदनाओं, विसंगतियों और विरोधाभासों का समुच्चय है, जिसके केंद्र में प्रेम है। व्यवस्था की साजिशों को पर्दाफ़ाश करने में भी वे नहीं हिचकते, न ही भूमंडलीकरण और पूंजीवाद की वज़ह से हो रहे नैतिक क्षरण पर क़लम चलाने से परहेज करते हैं। इनकी क़लम इनकी ताक़त है। मुझे यकीन है कि यह पुस्तक हिंदी ग़ज़ल की दुनिया में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करने में कामयाब होगी।

डॉ. भावना
मुज़फ़्फ़रपुर
संपादक, आँच साहित्यिक वेब पत्रिका
संपर्क: 790 368 8376

काफ़ियों के पहरे में शे'रियत बरसती है

"मैं सत्ह-ए-आब पे उभरा हूँ आफ़्ताब लिए
ख़ुलूस-ए-फ़िक्र शऊरो-नज़र के ख़्वाब लिए"

मंज़रे-आम पर उभरने को बेताब श्री रमेश 'कँवल जी का शे'री मजमुआ पढ़ रही हूँ और तरमीम के साथ नियाज़ हुसैन जी का उपर्युक्त शे'र गुनगुना रही हूँ। न जाने हमें क्यों लगा कि रमेश कँवल जी के लिए ही ऐसे शे'र वारिद हुए होंगे।

भला और नया करने के लिए सत्य-सामर्थ्य होना अतिआवश्यक होता है।आधुनिक युग न तो रीतिकाल जैसा है और न ही पूर्ण आधुनिक। हम सब ही आज त्रिशंकु की भाँति साहित्य में सृजनरत हैं। ऐसी अवस्था में श्री रमेश कँवल जी सदैव ही कुछ नवीन कह कर आधुनिकता का बिम्ब तलाश करते रहते हैं।

उनका ये शे'र देखिए-

जिस तरफ़ सब गए
हम उधर कब गए

साक्षरता बनाम समझदारी का नाम हैं श्री रमेश कँवल जी। आप सरकारी ओहदे पर रहे मगर मिट्टी की ख़ुश्बू आपकी पहली पसंद रही।

तब ही तो आप कह सके:

शह्र से लाज का अपहरण हो गया
गाँव में अस्मिता का क्षरण हो गया

छल-कपट और स्वार्थ में जब दुनिया मगन रही तब आप परिवार और नौकरी की ज़िम्मेदारी को बख़ूबी निभाते हुए अपने गुरु से तालीम हासिल करना नहीं छोड़ा।

वर्तमान समय में एक फ़ैशन है गुरु बनने की ललक रखना। तालीम पूरी हुए बिन ही गुरुओं की पैदाइश हो जाना या स्वयं गुरु बन जाना। आजकल बहुत आम बात है या यूँ कहें कि हर तरफ़ उस्तादों की बाढ़ सी आई हुई है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मगर ऐसे समय में आदरणीय रमेश कँवल जी अपने गुरु को न केवल 'अक़ीदत के फूल' पेश करते हैं अपितु "बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी-मरकज़े-रंगे-हुनर" के ज़ेरे-एहतमाम उन्हें अमर करने की काविशों में मशगूल भी रहते हैं।

आपने एक शे'र कहा है:-

नाम यश डिग्री पता मान गए
रफ़्ता-रफ़्ता सभी पहचान गए

ऐसी महान शख़्सियत की ग़ज़लों का मजमुआ 'इतराती बलखाती ग़ज़लें' मन्ज़रे आम पर आने वाला है और इस संग्रह की ख़ास बात यह है कि यह अपने नाम के अनुरूप हर फ़ेस को दिखाने में सक्षम है।

पहरे मंदिर पर देखो
ईश्वर में भी डर देखो

चन्द साँसें ख़रीद भी न सके
धन का ऐसा निज़ाम है साहिब

कोमल बच्चों के दम पर
दहशत का बाज़ार किया

फ़ोन पर ख़ैरियत पूछ ली
दोस्त सब अपने घर में रहे

आओ सस्ते में बिक जाएँ हम
शहर महंगा हुआ तो हुआ

इतने एप हसीं दिखने के
बद चेहरा बेहतर दीखता है

जी हुज़ूरी करो
हर ख़ुशी मुफ़्त लो

दिल स्थूल शरीर की आयु या उम्र का मोहताज कब हुआ, उसका तअल्लुक़ तो बस भावनाओं की क्षितिज पर तैरते प्रेम स्पंदन को समेटते रहने से है। श्री रमेश 'कँवल' के चन्द अशआर देखिये-

आँखों से इस्कैन किया
क़ातिल चेहरा बैन किया

ख़ुद को जब सौंपा तो जाना
साधना कितनी सफल है

आँखों से जब दूर हुआ
दिल ये चकनाचूर हुआ

मेरी ग़ज़लों की है रानी जो उसकी बात ही क्या है
मोहब्बत है ये रूहानी जो उसकी बात ही क्या है

कितना लिखें और कौन कौन से शे'र चुन कर ले आयें हम यहाँ?
हर शे'र अपने आप में ख़ास है, कुछ मेहनत पाठक भी तो करें।

जहाँ कहीं भी रहें इक मिसाल बन के रहें
बुझे दिलों के लिए हम मशाल बन के रहें

आदरणीय रमेश 'कँवल' जी को मैं अपना ये शे'र समर्पित कर रही हूँ और उन्हें हृदयतल से शुभकामनाएँ दे रही हूँ कि आप इसी तरह स्वस्थ और मस्त रहते हुए शताधिक वर्षों तक अदब की सेवा करें।

नेक ख़्वाहिशात के साथ

शुचि 'भवि'
(ग़ज़लकारा-कथाकारा-कवयित्री)
भिलाई, छत्तीसगढ़
मोबाइल-7987723978
shuchileekha@gmail.com

कुछ बात मेरी भी - रमेश 'कँवल'

2018 को बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना की स्थापना हुई। बिहार उर्दू अकादमी, पटना, बिहार साहित्य सम्मलेन पटना, बिहार प्रशासनिक सेवा संघ भवन और गांधी मैदान के पुस्तक मेला में उस्तादे मरहूम हफ़ीज़ बनारसी को खिराजे-अक़ीदत पेश करते हुए तरह तरह के प्रोग्राम आयोजित हुए। उस्ताद के मिसरा-ए-तरह पर पटना और बाहर के दीगर शायरों ने ग़ज़लें भी कहीं।

2019 में हिंदी में मेरे ग़ज़ल संग्रह 'स्पर्श की चाँदनी' के बाद मैं ग़ज़लों के संकलन और सम्पादन कार्य में जुट गया। 2020 में 'अक़ीदत के फूल', 2021 में '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' और इस साल 2022 में 'इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' का प्रकाशन संभव हो सका। 2020-21 तो कोरोना काल था जिसमें-

फ़ोन पर खैरियत पूछ ली
दोस्त सब अपने घर में रहे

अदबी महफ़िलें थम सी गईं। ऑनलाइन मुशायरा सेमीनार होने लगे। वैसे भी मैं पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ ग़ज़लें कहाँ भेज पाता हूँ। फ़ेसबुक और WhatsApp पर ग़ज़लें प्रकाशित होती रहीं। तरह तरह के डिजाईन बनते रहे।

3-3 संकलित/सम्पादित पुस्तकें मुझे शोहरत की चाँदनी में स्नान-आनंद दिलाती रहीं। मित्रों, अभिभावकों के मान सम्मान से सरोबार होता रहा। अभी कुछ और संकलन आने हैं।

मित्रों का इसरार था कि मैं अपना मजमुआ नहीं निकलवा रहा हूँ। अस्तु सोशल मीडिया पर प्रकाशित-अप्रकाशित ग़ज़लों को समेटकर ये मजमुआ आपकी फ़न शनास निगाहों की गिरां क़द्र राय के लिए पेश कर रहा हूँ। आपको कैसी लगी ये तो आप ही बताएँगे।

सुर साम्राज्ञी भारत रत्न लता मंगेशकर को समर्पित ग़ज़ल संग्रह 'इतराती बलखाती ग़ज़लें' राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक और राष्ट्रीय गौरव नरेन्द्र मोदी को सप्रेम भेंट कर रहा हूँ।

डॉ. कृष्ण कुमार नाज़ का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि पर नज़रे-सानी कर के जाने अनजाने हुई त्रुटियों का परिमार्जन कर उन पर शुद्धता का आवरण डाला। आदरणीय विज्ञान व्रत जी से प्राप्त स्नेह के लिए जो इस पुस्तक के कुछ पृष्ठों पर उनकी हस्तलिपि के प्रतिबिम्बों का टंकण कर उतारा गया उन्हें प्रणाम करता हूँ। भाई देवेन्द्र मांझी जिन्होंने अपनी अस्वस्थता को दरकिनार कर इस ग़ज़ल संग्रह की खूबियों को उकेरने का प्रयास किया ; ग़ज़ल विधा पर निरंतर क़लम चलाने वाली वेब पत्रिका की संपादक डॉ. भावना और फेसबुक पर स्त्री परामर्श की छवियाँ, पेंटिंग्स और सुरुचिस्निग्ध चित्र पोस्ट करते रहने वाली इलेक्ट्रॉनिक्स में गोल्ड मेडलिस्ट विदुषी श्रीमती शुचि 'भवि' जी का आत्मिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मेरी ग़ज़लों को अपनी लेखनी की प्रशंसा के योग्य समझा।

मैं 44 साल से अपना संग-सौंदर्य प्रदान करने वाली भार्या श्रीमती मंजु प्रसाद के प्रति अपना स्नेह भाव ज्ञापित करता हूँ जो मुझे संकलन-सम्पादन से दूर हट कर मेरी ग़ज़लों को भी ग़ज़ल व्योम में उपस्थापित करने की निरंतर प्रेरणा देती रहीं।

मैं अपने दोनों पुत्रों कुमार अभिषेक एवं कुमार संभव को भी आशीर्वाद देता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को प्रस्तुत करने में सहयोग किया। और मैं अपनी बहु रिहा को भी साधुवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे काव्य साधना में लीन होने पर मेरे लैपटॉप टेबल पर समयानुसार चाय नाश्ता रख कर समय का भान कराती रहीं।

आइये इतराती बलखाती ग़ज़लें का किताब के पन्नों पर इतराने का आनंद लीजिये और मुझे मुस्कुराते हुए बताइये कि ये कैसी हैं!

धन्यवाद

16 मई, 2022
बुद्ध पूर्णिमा।

रमेश 'कँवल'
ई-मेल rameshkanwal78@gmail.com

1.

छोड़ कर यह गयीं जहाँ फ़ानी
गीत संगीत की महारानी

आप मलिका थीं ताल सुर लय की
आपके दम से थी ग़ज़ल ख़्वानी

वो भजन हो कि गीत नग़मा हो
आपका था कहाँ कोई सानी

मंत्र हों या हो राम शिव की कथा
गूँजे मंदिर में आपकी वाणी

गीत दर्दीले हों कि ख़ुशियों के
आप सारी धुनों की हैं रानी

संत, योगी, जवान, बच्चे क्या
आपको गायें दादी और नानी

आप मंज़िल थीं गायिकाओं की
सब ने बनने की आप-सा ठानी

आप क्रिकेट की फैन थीं, सच है
सारी दुनिया ने बात यह मानी

हैं अक़ीदत के फूल पेश 'कँवल'
आपके क़दमों में महारानी

2.

मैं अपने होंठों की ताज़गी को तुम्हारे होंठों के नाम लिख दूँ
हिना[1] से रोशन हथेलियों पर नज़र के दिलकश पयाम लिख दूँ

अगर इजाज़त हो जाने-मन तो किताबे-दिल के हर इक वरक़ पर
मैं सुबहे-काशी की रौशनी में अवध की मस्तानी शाम लिख दूँ

बदन पे सावन की है इबारत[2], नज़र में दोनों की एक चाहत
मेरे लबों को जो हो इजाज़त, वफ़ा का पहला सलाम लिख दूँ

जो दिलनशीं है सितम पे माइल उसे हर इक पल दुआएँ दूँ मैं
सुलगते सूरज से दूर रखकर अमन सुकूं का क़याम लिख दूँ

मसर्रतों पे ग्रहण प्रदूषण अवामी ख़ुशियाँ बिलख रही हैं
तुम्हीं बताओ ऐ मेरे रहबर कहाँ से बेहतर निज़ाम लिख दूँ

डिलीट कर दूँगा उसके ग़म को मैं दिल के अब लैपटॉप से ही
ख़ुशी के जितने मिले हैं 'डाटा' उन्हें मैं दिलबर के नाम लिख दूँ

मुक़द्दमा जो चला बहुत दिन लो आ गया उसका फ़ैसला भी
'कँवल' मैं चाहूँ गले लगाकर अदू के दिल में भी राम लिख दूँ

---

1 हिना-मेहंदी

2 इबारत-लिखावट

3.

मुझसे मिल के वो क्यों इतना गदगद हुआ
क्या मैं उसकी मसर्रत की सरहद हुआ

फ़ायदा झुक के मिलने से बेहद हुआ
सबके क़द से बड़ा मेरा ही क़द हुआ

मसअले नौजवानों के गुमसुम रहे
हिंदू-मुस्लिम पे हर मुख विशारद हुआ

ताज तेजोमहालय न कहलाए क्यों
उसके हर कक्ष से बुत बरामद हुआ

संस्कृति धर्म संग्राम प्रारंभ है
बंद तुष्टीकरण हो ये मक़सद हुआ

हमने पैग़ाम अम्नो-अमां का दिया
फिर भी सरहद पे आतंक बेहद हुआ

माँ से बरकत, हिफ़ाज़त, मुहब्बत 'कँवल'
बंदापरवर का तमग़ा नदारद हुआ

4.

रिश्तों में पहले जैसी तमाज़त[1] नहीं रही
शक शुब्हा है सभी पे वो चाहत नहीं रही

सच है कि खुल के अपनी अदावत[2] नहीं रही
पर साथ-साथ रहने में लज्ज़त नहीं रही

दिलकश है हुस्न उनका मैं अब भी जवान हूँ
पर वस्ल के मिज़ाज में उजलत[3] नहीं रही

पहले जो बनते और सँवरते थे रात दिन
'टिक टाक' से तो अब उन्हें फ़ुर्सत नहीं रही

जम्हूरियत है कैसी कि 'चुप रह' ये हुक्म है
ताले हैं लब पे इज़्ने-समाअत[4] नहीं रही

कुछ लोग तो कमाते हैं दिन रात बिन थके
कुछ लोगों को कमाने की आदत नहीं रही

पहले जो सुबहो-शाम 'कँवल' मेहरबान थे
उन दोस्तों की हम पे इनायत[5] नहीं रही

---

1 गर्मी
2. दुश्मनी
3 उतावलापन
4 सुनने की अनुमति
5 कृपा

5.

तुम्हारे लफ़्ज़ों को भावनाओं की पालकी में बिठा रहा हूँ
दिले-हज़ीं में मची है हलचल मैं आँसुओं को छुपा रहा हूँ

तुम्हारी पलकें झुकी हुई हैं तुम्हारे लब थरथरा रहे हैं
तुम्हारी ठोड़ी को उँगलियों से मैं धीरे-धीरे उठा रहा हूँ

तुम्हारी ख़ातिर ही की बग़ावत तुम्हें शिकायत है क्यूँ ज़ियादा
मैं भूल जाऊँ, न याद रक्खूँ, नसीहतें कब से पा रहा हूँ

बहुत दिनों की तलाश है ये जो रूबरू तुम हुए हो मुझसे
न दूसरा है कोई ज़मीं पर फ़लक की धड़कन सुना रहा हूँ

तुम्हें बना लूँ शरीके-जाँ मैं, गुज़ारिशें कब से अंजुमन में
मैं कर रहा हूँ मगर इशारा तुम्हारा पुख़्ता न पा रहा हूँ

पुलिस कि नर्सों का भेष धरकर सफ़ाई कर्मी कि डॉक्टर बन
इलाज करते हैं राम सीता हैं बंद मंदिर दिखा रहा हूँ

'कँवल' मेरी अहलिया की ख़िदमत रखे है घर में मुझे सलामत
मैं लॉक डाउन की मस्तियों में लतीफ़ ग़ज़लें सुना रहा हूँ

6.

गगन धरती की मैं हलचल रहा हूँ
युगों से सूर्य बन के जल रहा हूँ

ग़मों के शह्र का वासी हूँ जब से
ख़ुशी के गाँव से ओझल रहा हूँ

अँधेरों के फ़साने से हूँ वाक़िफ़
दिया हूँ शाम से ही जल रहा हूँ

लगाया है मुझे नाज़ो-अदा से
किसी की आँख का काजल रहा हूँ

मुझे पहनाया है मेरे पिया ने
वफ़ा के पांव की पायल रहा हूँ

समय हूँ! हाथ कब आया किसी के
बताने वालों का संबल रहा हूँ

करोना अब नहीं है कह के सब से
'कँवल' मैं ख़ुद से ख़ुद को छल रहा हूँ

7.

कुर्सियाँ हैं कहाँ फैला अख़बार है
धूप के फ़र्श पर बैठा दिलदार है

भोर का तारा चलने को तैयार है
हर हथेली पे सूरज का उपहार है

चाँदनी रात है, चाँद है झील में
मेरे बिस्तर पे तारों का अंबार है

तख़्त है नाव पर, छेद हैं नाव में
जलमहल में सजा मेरा दरबार है

धूल धरती पे छाए गगन पे घटा
आदमी के लिए उसका घर-बार है

इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत
अब 'अमेज़न' पे मस्ती का बाज़ार है

आज माहौल पर सोचिये कुछ 'कँवल'
शहर ज़हरीली वादी में लाचार है

8.

शह्र से लाज का अपहरण हो गया
गाँव में अस्मिता का क्षरण हो गया

उनके दफ़्तर में सूरज रहा क़ैद जब
कालिमा का घरों में वरण हो गया

भाईचारे पे हिम खंड जमते रहे
भाई का शत्रु-सा आचरण हो गया

लड़कियां रस्सियों पर सँभलती रहीं
साँस थमने का वातावरण हो गया

कोट टाई में जब आदिवासी मिले
गाँव की सभ्यता का मरण हो गया

क्या हुआ कार से लोग कुचले गए
धन मिला, दुख का नकदीकरण हो गया

सर से गठरी जो फेंकी अपेक्षाओं की
मेरे दुख का 'कँवल' आहरण हो गया

9.

सवाल आँखों से कर रहा हूँ, जवाब पलकों से दे रही है
ख़मोशियों की मुहर लगाकर, शराब नज़रों से दे रही है

मुहब्बतें जो यूँ ही लुटा दें अदावतों से कहाँ है हासिल
इसीलिए तो ये रहनुमाई सिला[1] दुआओं से दे रही है

पता न गूगल को लफ़्ज़ हैं जो पुकारती है उन्हीं से मुझको
ज़माना जिसको समझ न पाए वही इशारों से दे रही है

जो धड़कनों में मचल रहा है उसी मुहब्बत को भूल जाऊं
शिकस्त खाकर ग़मों से मुझको सदा सलीबों से दे रही है

न बालकोनी में कोई पंछी, न हैं कबूतर किसी भी छत पर
पयाम गमले की सब्ज़ पत्ती उदास आँखों से दे रही है

अना के एहसास की हवेली, हवस में डूबी, मज़ा नदारद
ये दावतें दे रही है लेकिन पराये जूड़ों से दे रही है

सफ़र में बिछड़ा है वो तभी से अज़ाब झेला है हमने तनहा
विसाले-यारां 'कँवल' ख़ुशी बस कुछ एक लमहों से दे रही है

---

1 ईनाम

10.

दिल का मकान ग़म ने किराये पे ले लिया
खुशियाँ जो मुस्तक़िल[1] थीं उन्हें बेदखल किया

हमने बयान दर्ज़ कराया नहीं अभी
पर फ़ैसला सुनाने को बेकल है अद्लिया

स्कूल ने पढ़ाया सिखाया है पाठ वो
हर रोज़ इम्तिहान का ख़त लाये डाकिया

यारों में बांटते रहे जो भी ख़ुशी मिली
हमने कभी न बैंक में ये धन जमा किया

हक़ एक-सा सभी का है जल-वायु-भूमि पर
कैसे इसे जनाब ने नाम अपने कर लिया

है सारे हुक्मरान को रिश्वत की लत लगी
क्या-क्या न गुल खिला रहा बालू का माफ़िया

होंठों पे रक्स करते नहीं लफ्ज़ अब कँवल
अच्छा है अब ग़ज़ल को कहें बाई, शुक्रिया

---

1 स्थायी

11.

रात दिन उसको सोचना क्या है
यादे-माज़ी में अब रखा क्या है

जो न अपना हुआ भला क्या है
उसके इस जुर्म की सज़ा क्या है

आप अब तक समझ नहीं पाए
बंदगी क्या है और ख़ुदा क्या है

जब अमानत है ज़िन्दगी उसकी
मौत किसकी है ये बला क्या है

हुस्न वाले ही ये बताएँगे
जुरअते-इश्क़ की सज़ा क्या है

डूबने वाले को बचा लाया
एक तिनके का हौसला क्या है

साज़िशों के भंवर डुबा बैठे
इक शनावर[1] का डूबना क्या है

पूछते हैं वो देंगे हम रिश्वत
आइना झूठ बोलता क्या है

उनकी चाहत का है सिला ये 'कँवल'
लज़्ज़ते-ग़म का क़ाफ़िला क्या है

---

1 तैराक

12.

गुलबदन पर निखार का मौसम
जोश में है बहार का मौसम

फूल पत्ती पे प्यार का मौसम
खो गया इख़्तियार का मौसम

आप आए तो हो गयी तस्दीक[1]
लुट गया इंतज़ार का मौसम

आई फ़स्ले-बहार तो देखा
ग़म पे नाज़िल फ़रार का मौसम

मुफ़लिसी में कहाँ ठहरता है
मर्द के एतबार का मौसम

ये बजट ले उड़ा ग़रीबों से
उनके सब्रो-क़रार का मौसम

अपने सूबे में दरबदर है 'कँवल'
मय को तरसे ख़ुमार का मौसम

---

1 संपुष्टि

13.

तुम्हारी यादों का सिलसिला हो
उदास कमरा भी हँस रहा हो

बुझे से चेहरों से मिल के क्या हो
ख़ुशी जो अपनी है वो फ़ना हो

सुलूक था अजनबी-सा उसका
लगा नहीं वो कभी मिला हो

बुरे हैं दिन तो निराश हो मत
दुआएँ कर आगे दिन भला हो

कहाँ मुंडेरों पे काग बोले
चला कोई कैसे ये पता हो

चुनाव में जो फ़िज़ा बनी है
न जाने होली से पहले क्या हो

'कँवल' मुबाइल पे व्यस्त हैं सब
घरों में हैं सब अलाहिदा हो

14.

धर्म संसद में हुईं जब गालियाँ
नफ़रतों के दरमियाँ हैं बस्तियाँ

भीड़ पर यूँ छा रही हैं मस्तियाँ
गालियों पर बज रही हैं तालियाँ

सोचते हैं क़ौमी मिल्लत ये कहाँ
ग़लतियों पर कर रहे गुस्ताखियाँ

लाखों की लाइन में हैं बेरोजगार
रेलवे बरसा रहा है लाठियाँ

फ़ॉलोवर घटने लगे हैं आपके
अब बदलिए आप अपनी नीतियाँ

याद आए फ़ोन विडियो कॉल हो
अब कहाँ आतीं किसी को हिचकियाँ

कौल का मौसम गुज़रते ही 'कँवल'
अंडा देने से ही मुकरीं मुर्गियाँ

15.

हर जगह उनका नाम है साहिब
साहिबा को सलाम है साहिब

मस्त आँखों का जाम है साहिब
मयकदा अब हराम है साहिब

जब से रब का है नाम होंठों पर
ग़म का क़िस्सा तमाम है साहिब

चन्द साँसें खरीद भी न सके
धन का ऐसा निज़ाम है साहिब

बादशाहत है चाँद तारों की
रात तो बस ग़ुलाम है साहिब

क्यों मैं इज़्ज़त मआब से मिलता
हसरतों पर लग़ाम है साहिब

अब कहाँ हम गले लगाते हैं
दूर से ही सलाम है साहिब

सब्ज़ियों में है ज़ह्र की रंगत
ताज़ा फल भी हराम है साहिब

उनकी चाहत का जश्न ख़त्म हुआ
शामे-ग़म का पयाम है साहिब

16.

रिश्तों को मिस्मार किया
एक नहीं सौ बार किया

ठण्ड से राहत पाने को
सूरज का दीदार किया

फूल खिला कर गमले में
पौधों का श्रृंगार किया

कोमल बच्चों के दम पर
दहशत का बाज़ार किया

चैट किया, डीपी बदली
दिल ने यूँ इज़हार किया

छोड़ खिलौने बच्चों ने
मोबाइल से प्यार किया

फैलाई दहशत-वहशत
मज़हब को हथियार किया

हमने कर के प्यार 'कँवल'
ग़म का कारोबार किया

17.

रंग उसका उड़ गया
नाग जब सम्मुख दिखा

रह गया मुँह देखता
जाने क्या उसने कहा

झूठ का था दबदबा
सत्य कोने में मिला

कब दिखा हर शख़्स में
सच सुने यह हौसला

हो गया आँसू से तर
फूल तकिये पर कढ़ा

जान ले कर लाखों की
ठण्ड का मौसम गया

मेरी शुहरत भी गयी
जब मेरा ओहदा गया

उनके फ्री के जश्न में
टैक्स-पेयर लुट गया

बुत को नेताजी के अब
मिल गया है घर नया

बन रहा है देखिए
भव्य मंदिर राम का

अब जवानों को 'कँवल'
ज्योति का संबल मिला

18.

जलसों में झूठा बोले
सच हो कर बेबस रो ले

रूठ गयी क़ौमी मिल्लत
भाषा कैसी ये बोले

पहली बार न रोका तो
ज़ुल्मी हरदम मुँह खोले

इश्क़ बहुत करता है शोर
हुस्न इशारे से बोले

ग़म का पलड़ा भारी है
कौन ख़ुशी को अब तोले

झूठ की गश्ती कर्फ़्यू में
कौन दुकां सच की खोले

तोहफ़ों की रिश्वत दूंगा
आ मेरे संग तू हो ले

जंगल में मुस्कानों के
अपनेपन के हैं टोले

काशी के गंगाजल में
दाग़ 'कँवल' तू भी धो ले

19.

हर शह्र गाँव क़स्बे पे यूँ मेहरबां हुआ
शुहरत का तू ही राहे-रवां, कारवां हुआ

आवाज़ की बुलंदियां बस तेरे नाम थीं
दोनों जहाँ में कोई भी तुझसा कहां हुआ

यकजा हुए लता में यूँ सुर ताल और लय
ठुमरी, ग़ज़ल, भजन का हसीं गुलसितां हुआ

कमबख़्त बेसुरी नहीं होती कभी भी ये
बिस्मिल्ला का ये फ़िकरा हक़ीक़त बयां हुआ

हुब्बुल वतन का तज़्किरा था मेरे नाम ही
सारे जहाँ की नज़रों में मैं दास्ताँ हुआ

तेरी तलाश ने मुझे भटकाया यूँ 'कँवल'
हर इक पड़ाव मुझ को तेरा आस्तां हुआ

20.

समुन्दर में बेचैन हैं मछलियाँ
गिराए हुए जाल हैं किश्तियाँ

'पढ़ाई लिखाई का मौसम कहाँ'
चली आईं बुर्के में सब बच्चियाँ

चलाता है चप्पू कहाँ नाख़ुदा
पसोपेश में रेत पर बस्तियाँ

इशारा हवा का हुआ जैसे ही
नशेमन पे गिरने लगीं बिजलियाँ

ज़मीं पर था अदना सा चेहरा जिसे
कोई चांद कहता, कोई कहकशां

कई मदरसे साज़िशों में फंसे
यहां इल्मो-फ़न की उड़ी धज्जियाँ

'कँवल' हुकमरां जब से बदले मेरे
सियासत बदलने लगी नीतियाँ

21.

नाम यश डिग्री पता मान गए
रफ़्ता-रफ़्ता सभी पहचान गए

सुल्ह करते हुए दिन बीत गया
रात के पिछले पहर मान गए

पहले हर बात पे जिच होती थी
अब अना ज़िद सभी तूफ़ान गए

यूँ तो वो पास ही होते हैं मेरे
पर मेरे दिल के वो अरमान गए

किसकी हस्ती रही क़ायम हर दम
एक से एक थे सुलतान गए

जो भी वादे किये फ़र्ज़ी निकले
सारे हुक्काम के ऐलान गए

जिनकी सुहबत में संवरती थी ख़ुशी
कैसे-कैसे यहाँ इंसान गए

फूल बरसाते थे जो रहमत के
रास्ते छोड़ के सुनसान गए

अब ज़ियादा न दिलासे दे 'कँवल'
ज़िंदगी हम तुझे पहचान गए

22.

मौज में आज थी जलपरी
उस पे पहरा, नहीं था कोई

मौत अपना बनाने को थी
मुझको भाने लगी ज़िंदगी

अनकही याद सबको रही
जो कही कब गई वह सुनी

जम के बैठे रहे रंजो-ग़म
जल्द चल दी, न ठहरी ख़ुशी

जब समाअत[1] पे हों बंदिशें
भाड़ में जाए वो मुंसिफ़ी

राम मंदिर बना कर 'कँवल'
आप ने हद सभी पार की

---

1 श्रवण

23.

दोस्त आओ तो सही
कुछ बताओ तो सही

क्यूँ ख़फ़ा रहती हो यूँ
घर बसाओ तो सही

मैं मनाऊं कब तलक
मान जाओ तो सही

लब तबस्सुम से सजा
गुनगुनाओ तो सही

हुस्न के ज़ेवर पहन
मुस्कुराओ तो सही

सादगी की धूप ले
छत पे आओ तो सही

कब 'कँवल' समझोगे तुम
ये बताओ तो सही

24.

आपका जो ख़त पढ़ा
दिल तारो-ताज़ा हुआ

अब कहाँ शिकवा गिला
अब सितम में भी मज़ा

है इलेक्शन की फ़िज़ा
वादे पर वादा बड़ा

आपकी बातें सुनीं
आपका चेहरा पढ़ा

लब पे जग की बंदिशें
आँख ने सब कुछ कहा

बाग़बाँ कोई न जब
बाग़ है तब ही हरा

हो गए जब हम बड़े
झूठ कहते हैं खरा

टैक्सपेयर क्या करें
धन कमाई का लुटा

झूठ हारेगा 'कँवल'
कोर्ट को सच सच बता

25.

ऑनलाइन ग़म दिखा
दिल का जब दफ़्तर खुला

हसरतों की लौ बुझी
चाह का परचम झुका

ख्वाहिशें बढती गयीं
आदमी का क़द घटा

ग़म का कुछ सामान कम
मेरी आँखों में मिला

ढूँढता हूँ सुब्ह से
शाम की रंगीं फ़िज़ा

बे सलीक़ा बे हुनर
है तिजारत इक सज़ा

भीड़ की आँखों में वो
ढूँढता अख़लाक़ था

लूटकर मस्ती-ख़ुशी
तोड़ बैठे दिल मेरा

दे न पाए वो 'कँवल'
मेरी ख़िदमत का सिला

26.

घटाकर वो क़ीमत बताता रहा
मेरा ज़र्फ़, मैं मुस्कुराता रहा

उभरता रहा, मैं डुबाता रहा
निगाहों में वह आता जाता रहा

मेरा हौसला उसको भाता रहा
मैं हैरतज़दा गुनगुनाता रहा

मेरी रूह की रंजिशें जानकर
मेरे जिस्म को वह मनाता रहा

खिलौनों पे बच्चे मचलते रहे
पिता भी विवशता छुपाता रहा

मेरा हमसफ़र ज़िद की बस्ती में था
उसे बे-सबब मैं घुमाता रहा

सिखाता रहा रूठना मैं 'कँवल'
बिना मा'नि मतलब मनाता रहा

27.

उजाले बांटने जो चल पड़े हैं
मेरे दर पर वो नाबीना खड़े हैं

ये परदे रेशमी तो हैं यक़ीनन
मेरे सपनों के इनमें चीथड़े हैं

हवा लेकर हम आयेंगे सुगन्धित
ये वादा कर गए जो ख़ुद सड़े हैं

किये हैं सर क़लम लाखों का फिर भी
पढ़ा है हमने वो 'अकबर' बड़े हैं

न दूरी है, न मुँह पर मास्क उनके
सभाओं में सियासतदां अड़े हैं

तरक्क़ी कर रहा है मुल्क अपना
हर एक सू मील के पत्थर गड़े हैं

'कँवल' महबूब है बाँहों में मेरी
पलक झपके न यूँ नैना लड़े हैं

28.

आँखों से इस्कैन किया
कातिल चेहरा बैन किया

ख़ौफ़ की इक कालीन बिछा
दुश्मन को बेचैन किया

भक्त बना शिव का मैं भी
घर अपना उज्जैन किया

सपने सब रंगीन हुए
श्रम मैंने दिन-रैन किया

हरियाली पर धूप बिछा
जंगल मन बेचैन किया

मेरी ग़ज़ल की ख़ुशबू ने
सबको अपना फ़ैन किया

कौन 'कँवल' को समझाए
क्या उस शोख ने बैन किया बात

29.

हौसलों के नगर में रहे
ख़्वाब मेरे सफ़र में रहे

मास्क पहने रहे मुँह पे दो
अपनी सेहत के डर में रहे

राहतें जो नहीं दे सके
हॉस्पिटल वो ख़बर में रहे

आग शमशान की कब बुझी
अश्क ही चश्मे-तर में रहे

भाप ली, काढ़ा हमने पिया
ख़ौफ़ के हम असर में रहे

हम बना कर रहे दूरियां
और सबकी नज़र में रहे

फ़ोन पर ख़ैरियत पूछ ली
दोस्त सब अपने घर में रहे

हद न दीवारों की पार की
क़ैद हम बामो-दर में रहे

कब गए मंदिरों में 'कँवल'
ध्यान पूजा अधर में रहे

30.

मौत की दहशत छाई है
कोविड वबा जो आई है

हॉस्पिटल सब फ़ेल हुए
जान पे ही बन आई है

ऑक्सीजन और बेड नहीं
मौत की बदली छाई है

कचरा गाड़ी में लाशें
शर्म किसे पर आई है

एयर फ़ोर्स की जय बोलो
ले ऑक्सीजन धाई है

एम्बुलेंस सब लूट रहे
गाढ़ी अभी कमाई है

मिलती है जो ब्लैक में अब
ये कोविड की दवाई है

मस्त चुनावी भीड़ जुटी
नेता तुझे बधाई है

बाराती को ख़ौफ़ कहाँ
कोविड में भी सगाई है

शहर नगर से बुरी है ख़बर
आँख 'कँवल' भर आई है

31.

आँखों से कुछ छुपा नहीं रहता
इनको क्या क्या पता नहीं रहता

होंठों पर हर निगाह रहती है
लफ़्ज़ लब पर सजा नहीं रहता

बादलों के सितम को क्या कहिये
शह्र अच्छा-भला नहीं रहता

अब मुसाफ़िर शजर तलाश करें
शम्स अब ख़ुशनुमा नहीं रहता

आज सूरज ने सबको समझाया
अब्र का दबदबा नहीं रहता

बादलों और हवा की दहशत से
आसमां कब डरा नहीं रहता

बिजलियाँ सर पे जब 'कँवल' चमकें
मौत का कुछ पता नहीं रहता

32.

मेरी ग़ज़लों की है रानी जो, उसकी बात ही क्या है
मुहब्बत है वो रूहानी जो, उसकी बात ही क्या है

हसीं महफ़िल सजाई है, हँसी है, क़हक़हे भी हैं
वो मिस्ले-हुस्ने-दीवानी जो, उसकी बात ही क्या है

मेरे जीवन की माला में है वो एक डोर की सूरत
करे दुनिया को नूरानी जो, उसकी बात ही क्या है

मुझे जूठा यूँ कर डाला है उसके इश्क़ ने लोगो
नहीं मिलता हवा पानी जो, उसकी बात ही क्या है

मुसीबत के बुरे मौसम में उसका आसरा है बस
दरस दे दे महारानी जो, उसकी बात ही क्या है

किसी राजा की शह ने मात दे दी है दरिंदों को
न जनता को परेशानी जो, उसकी बात ही क्या है

सुहानी शाम है रिमझिम फुहारें खुल के बरसी हैं
'कँवल' आ जाए दिलजानी जो, उसकी बात ही क्या है

33.

डूबने वालों में उसका नाम है
इक शिनावर[1] का अजब अंजाम है

फाँकता था गर्द वो जिस राह की
वो सड़क उस अजनबी के नाम है

पांव कोई रौंद न डाले उन्हें
सूखे पत्तों में मचा कुहराम है

शुहरतें ग़ज़लों ने यूँ बख़्शी उसे
रात-दिन घर में न रहना आम है

है सदा उनको रिआयत की तलब
कुछ पहुंच वालों में उनका नाम है

औरों की ख़ुशियों में जो रहते हैं ख़ुश
उनके रुख़ पर रौनक़े-इल्हाम[2] है

लोग आये हैं चुनावी भीड़ में
अब करोना ही 'कँवल' अंजाम है

---

1 तैराक

2 ईश्वरीय चमक

34.

लमहाते-शाख़े-वक़्त[1] ने क़ादिर[2] बना दिया
रिश्तों के तजरुबात ने माहिर बना दिया

मंज़र[3] की चाहतों ने मुसव्विर[4] बना दिया
तहरीरे-ख़ुशक़बा[5] ने मुहर्रिर[6] बना दिया

कोई हो ज़ह्नो-दिल ने कहाँ सोचा कुछ ग़लत
हालाते-मुश्किलात ने ताहिर[7] बना दिया

यादों में उसकी कहने लगा हूँ हसीं ग़ज़ल
जज़्बाते-ख़ुशमिज़ाज[8] ने शाइर बना दिया

सोचा था घर बना के रहूँगा सुकून से
घर की ज़रूरतों ने मुसाफ़िर बना दिया

लमहों में लुट गया मेरे ईमान का जहाँ
उनकी निगाहे-नाज़ ने काफ़िर बना दिया

---

1 समय की शाख़ के क्षण/समय
2 शक्तिशाली और समर्थ, भाग्यवान,
3 दृश्य
4 चित्रकार
5 सुन्दर लिखावट
6 लिपिक
7 शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र
8 प्रसन्नचित भावना

मैं क्या उसे तो दिल से बहुत चाहते थे सब
सबने घने दरख़्त को नाज़िर[1] बना दिया

आँखों के हुस्न, लब की कशिश[2], बू-ए-ज़ुल्फ़[3] ने
हज़रत 'कँवल' के यार को साहिर[4] बना दिया

---

1 प्रबंधक, निरीक्षक
2 होंठों की आकर्षण शक्ति
3 अलकों/बालों का सुगंध
4 जादूगर

35.

कैसी बंदिश है कोई भी पसे-मंज़र[1] न लिखे
बात जो सच हो उसे कोई सुख़नवर[2] न लिखे

क़ौम कोई हो किसी को कोई बरतर[3] न लिखे
हाँ मगर जो भी है आला[4] उसे कमतर न लिखे

राम मंदिर वो बना लेंगें नहीं शक इसमें
राम वंशज को कोई अपने बराबर न लिखे

जो गुनहगार है इतिहास का लाज़िम है उसे
शाह अकबर को तो अब राणा से बेहतर न लिखे

कितने राजाओं ने मुग़लों से किये राज उमदा
उनकी मिदहत[5] में किसी ने कभी जौहर न लिखे

हमसफ़र जो न रहे उसका सफ़र ख़त्म करो
अब सियासत में कोई राह का पत्थर न लिखे

जो जिहादी है उसे अपने ही भाते हैं मगर
क्या 'कँवल' उसको कोई अपने बराबर न लिखे?

---

1 पृष्ठभूमि
2 शायर, लेखक
3 श्रेष्ठ
4 उत्तम
5 प्रशंसा

36.

दरख़्त फूल समर[1] डाली शादमाँ[2] देखूं
मैं बाग़बाँ को गुलिस्ताँ पे मेहरबाँ देखूं

दुआएँ उसकी मेरा सायबान लगती हैं
मैं जब परेशां लगूं साथ अपने माँ देखूं

मैं जंगलों का मज़ा ले रहा हूँ सर्दी में
हवा के काँधे पे सूरज रवाँ-दवाँ[3] देखूं

मुसीबतों का नगर है तो है मेरा क्या है
बुज़ुर्ग घर में हैं क्यों सू-ए-आसमाँ देखूं

किसी को रब नहीं दिखता कहीं पे भी लेकिन
बताइये कि मैं रब को नहीं कहाँ देखूं

फ़साना क़िस्सा कहानी वो चाहे कुछ भी कहें
हमेशा उनमें मैं अपनी ही दास्ताँ देखूं

किसे चुनूं मैं भले लोग भी हैं मुजरिम भी
'कँवल' कशाकशे-दिल है यहाँ वहाँ देखूं

---

1 फल
2 प्रसन्न
3 गतिशील

37.

जिसे हमने फेंका उठाया भी है
ग़रीबी ने ये दिन दिखाया भी है

न इंसानियत की है इज्ज़त कोई
सियासत ने हमको बताया भी है

कहाँ लम्स[1] तेरा भुला पाया मैं
कई मौसमों ने लुभाया भी है

न दिखला सका मेरे मन-सा मुझे
कि सोने से दर्पण सजाया भी है

कभी मैंने ख़ुद को न कमतर कहा
मेरा मशविरा काम आया भी है

शिवालों के बाहर कि भीतर खड़ा
कटोरा हर इक शख़्स लाया भी है

सभी राम के ध्यान में हैं 'कँवल'
अयोध्या ने सबको बुलाया भी है

---

1 स्पर्श

38.

फ़्लैट पर धूप आती नहीं
बाल धोये सुखाती नहीं

जब सुना गुनगुनाते उन्हें
कोई शय अब लुभाती नहीं

कुछ झिझक मिलने में है उसे
बेधड़क पास आती नहीं

हक़ बयानी की हिम्मत कहाँ
बात झूठी भी भाती नहीं

रहनुमाओं की तक़रीर अब
भाई चारा बढ़ाती नहीं

ख़्वाहिशें इतनी दिल की बढीं
कोई दुल्हन-सी भाती नहीं

लफ़्ज़ की धूप और छाँव बिन
शायरी रास आती नहीं

वंचितों को बिना कुछ दिए
ज़िन्दगी मुस्कुराती नहीं

क़ौम की मुश्किलें कब 'कँवल'
ये सियासत बढ़ाती नहीं

39.

मेरे सर की क़सम खाने लगा है
वो कह कर झूठ फुसलाने लगा है

बड़ी मुश्किल घड़ी है सामने अब
मैं हूँ आसान बतलाने लगा है

अजब मौसम है शहरो-गाँव में अब
किसी का डर हमें खाने लगा है

कहाँ का घर ये कैसा घर जहाँ पर
दरख़्ते-अम्न मुरझाने लगा है

'अबाइड विद मी' धुन बदलेगा भारत
'बिटिंग रिट्रीट' मुस्काने लगा है

सियासत किस तरफ़ बदलेगी करवट
हर इक अख़बार में आने लगा है

निज़ामे-मुस्तफ़ा की क़ब्र पर ध्वज
'कँवल' भगवा का लहराने लगा है

40.

आग पानी के आस-पास रही
बदहवासी मेरा लिबास रही

ग़म से निस्बत न कोई ख़ास रही
ज़ीस्त ख़ुशियों से ख़ुश-क़यास रही

जब न हद कोई या लिहाज रहा
ये सियासत भी बे असास रही

आप जबसे उदास रहने लगे
मेरी दुनिया बहुत उदास रही

आसमानों से उतरे हैं क़िस्से
शबनमी-सी ज़मीं पे घास रही

देख मंज़र ये लैंड स्लाइड के
ज़िन्दगी सबकी बदहवास रही

बंद क़ुदरत से छेड़छाड़ करो
ऐ 'कँवल' ये भी हक़ शनास रही

41.

पलक झुकाकर हामी भर
ज़िंदा रह, मुझ पर मत मर

दफ़्तर के दरवाज़े पर
टेंशन छोड़ के, आओ घर

मंडी में ख़ुशबू फैली
कुछ ईमान का सौदा कर

इंटरनेट बहुत स्लो है
चल मेरे संग, चल बाहर

रब से मैंने मांग लिया
मांग ले तू भी मुझ-सा वर

बहुत दिखावा, नेकी कम
उठ! चुपचाप न बैठा कर

अहले-वतन की मौज 'कँवल'
फ़ौज की गश्ती के दम पर

42.

मदिरा छलकाने आई
दिल से बतियाने आई

चूड़ी कंगन खनक उठे
जब वो सिरहाने आई

शांत हुई मिलकर मुझसे
मुझको समझाने आई

भटक रही है सदियों से
मुझमें खो जाने आई

ख़ुशबू है वह फूल नहीं
ख़ुद को बिखराने आई

नाम पता खो जायेगा
दर्पण दिखलाने आई

नंदी हैं शिव के सम्मुख
गौरी समझाने आई

43.

लफ़्ज़ बरते गए सलीक़े से
मा'नी समझे गए हैं अच्छे से

ये ज़माना हुआ मुख़ालिफ़ जब
साथ रहते कहाँ ज़माने से

तीरगी खो गयी जुदाई की
वस्ल की धूप आई ज़ीने से

मुझको बेचैन करते हैं अब भी
हौसले डूबते सफ़ीने से

मुझको दुनिया समझ में क्या आई
भूल बैठे इसे क़रीने से

ज़िन्दगी की उदास शहजादी
भीगा आँचल है, होंठ गीले से

बेसबब हैं 'कँवल' के लब सूखे
ख़ाली आँखों के दीप बुझते से

44.

कर्फ़्यू लगा है रात में बाहर न जाइए
फ़ुटपाथ जिनका घर हो उन्हें क्या बताइये

कोविड हो डेल्टा हो कि हो ओमिक्रोन ये
मेहमाँ बना के इनको न घर पर बुलाइए

दुनिया बहुत भली है बजा पर मेरे हुज़ूर
हरगिज़ न आप इसको कभी आज़माइए

सूरज का सुर्ख़ ख़ून फ़लक पर बिखेर कर
मक़तल ने तीरगी से कहा घर बसाइए

दुनिया बदल न पायेगी कोशिश न ये करें
ख़ुद को बदल के दुनिया को ख़ुशतर बनाइये

ज़ख़्मों पे मल के नून हँसेंगे ये बारहा
मत दोस्तों को घाव कभी भी दिखाइये

अच्छे दिनों की धूम है मथुरा चलें 'कँवल'
काशी में पूजा कर के अयोध्या भी आइए

45.

चाँद हुआ जब रिश्तेदार
तारे भी करते हैं प्यार

छत पे जाग के करते हैं
दोनों मिलने का इसरार

उसके मान मनव्वल पर
कब तक रहता मैं ख़ुद्दार

उनकी रिफ़ाक़त उफ़ तौबा
कर के कौल करें इनकार

झूठे वादे कर तुमने
मेरी उम्र बढ़ा दी यार

राधा-कृष्ण नज़र में हैं
गागर छलकाए पनिहार

हिज्र में ज़िन्दा रहना यूँ
बिन पेट्रोल के जैसे कार

कितने दिन छत इठलाये
दीवारों में देख दरार

गुल रहते हैं मस्त कँवल
कांटे उनके पहरेदार

46.

बारिश में भीगते हुए पास आया चल दिया
चाहत का पैरहन[1] मुझे पहनाया चल दिया

बादल की मस्तियाँ जो घुलीं ज़ुल्फ़े-यार में
गेसू झटक के चेहरे पे शरमाया चल दिया

उसमें था अंश आग, गगन, भूमि, पानी का
सब कुछ किया हवाले बहुत भाया चल दिया

साहिल पे धूप सेंकती कुछ मछलियाँ मिलीं
सूरज ने सबको राज़ ये बतलाया चल दिया

उरियाँ[2] बदन में परियों की दावत थी रेत पर
दरिया ने उनको ऊँगली से बुलवाया चल दिया

वो गुलशने-ख़याल में था मस्त पर 'कँवल'
दिल मौसमे-विसाल पे जब आया, चल दिया

---

1 वस्त्र

2 नग्न

47.

जिस तरफ़ सब गए
हम उधर कब गए

सच नहीं कह सके
ज़िंदा हम तब गए

उसने आवाज़ दी
बाअदब सब गए

दूर करने को जिच
सब मुहज्ज़ब[1] गए

इल्मो-फ़न सीखने
लोग मक्तब गए

कैसी महफ़िल थी वो
बेअदब सब गए

अपनी तफ़सीर[2] को
सारे मज़हब गए

सबके रब थे अलग
जंग में सब गए

दिल के दफ़्तर में हम
था 'कँवल' तब गए

---

1 सभ्य लोग

2 भाष्य/मतलब

48.

ठुकराओगे तो सोच लो पछताओगे बेशक
पत्थर हूँ शिवालों में मुझे पाओगे बेशक

उम्मीद की दुलहन हूँ निगाहों में बसा लो
मंज़िल पे मेरे साथ पहुँच जाओगे बेशक

तुम नींद में भी मुझ से जुदा हो नहीं सकते
ख़्वाबों के दरीचों पे नज़र आओगे बेशक

मुझको तो सज़ाओं की नहीं फ़िक्र मगर तुम
ख़ुद अपनी ख़ताओं पे ही शरमाओगे बेशक

पेट्रोल कि माचिस की ज़रूरत ही नहीं अब
तक़रीर-सियासत से ही जल जाओगे बेशक

ख़ुशबू से मुअत्तर करूँ चाहोगे अगर तुम
ज़ुल्फ़ों में मुझे गजरे-सा पहनाओगे बेशक

मोदी वो हक़ीक़त है 'कँवल' दावा है मेरा
तुम जल्द ही दिल से उन्हें अपनाओगे बेशक

49.

चार दिन की ज़िन्दगी में एक दिन भाया उन्हें
प्यार का मौसम सुहाना याद जब आया उन्हें

दस्तकों और आहटों पर यूँ तो चौकन्ना थे वे
थरथराये पर, दिखा जब मेरा ही साया उन्हें

कौन दिल छोटा करे नाकामियों के गिफ़्ट पर
सोचिये कुछ और बेहतर मन में क्या आया उन्हें

आँख के लाकर में ज़ेवर ख्वाब के कुछ तो रखो
ख़ालीपन के बैंक से दो क़र्ज़ सरमाया उन्हें

जब सलाखों की हिफ़ाज़त में 'कँवल' थीं खिड़कियाँ
प्यार से दर्पण ने उनका हुस्न दिखलाया उन्हें

50.

किनारे खड़ा था भला आदमी
नदी में रहा डूबता आदमी

सदा दूसरों पर फ़िदा आदमी
रहा हीनता से घिरा आदमी

निखार उसमें आया ख़ुशी में कहाँ
ग़मों में बिखरता रहा आदमी

सियासत की बस्ती में गुमसुम रहा
क़यादत पे उतरा नया आदमी

इनायात ग़ैरों पे करता रहा
मुसलसल सगों को ठगा आदमी

ज़माने की मीज़ान पर जाने क्यों
रहा ग़ैरों को तौलता आदमी

ख़ुशी के अलम को उठाए हुए
मिला सोग में ग़मज़दा आदमी

पिचहत्तर बरस हो गए ऐ वतन
नया देश अपना नया आदमी

'कँवल' देश रफ़्तार में खो गया
पिछड़ता हुआ रह गया आदमी

51.

अब कोई वहशतो-दहशत के ये मंज़र न लिखे
किसी स्कूल में बम, गोली कि ख़ंजर न लिखे

कोई भी शय हो उसे जान से बढ़कर न लिखे
अदलिया से है कोई शख़्स भी ऊपर न लिखे

नाख़ुदा है वही जो पार लगा दे कश्ती
जो डुबो दे उसे ये मुल्क शनावर न लिखे

तरबियत ऐसी हो जो क़द्र करे इंसां की
फूल की कोख से पैदा कोई पत्थर न लिखे

मौजे-दरिया में कोई कचरा गिराए न कभी
ज़िन्दगी के लिए तड़पे वो समन्दर न लिखे

जिसने इद्दत से, हलाला से दिलाई है नजात
क्या लिखे कोई जो 'मोदी' को पयम्बर न लिखे

एक अरसा हुआ दफ़्तर ने किया मुझको विदा
अब 'कँवल' को कोई सरकार का चाकर न लिखे

52.

मेरी आँखों में आ गए आँसू
ग़म का क़िस्सा सुना गए आँसू

जबसे बेदख़्ल है ख़ुशी उसकी
उसकी आँखों को भा गए आँसू

सामना ग़म से जब हुआ उसका
सुर्ख रुख को भिगा गए आँसू

बैन जब अंजुमन हुआ कोई
साज़िशों को ग़ला गए आँसू

बारिशों से ये काम हो न सका
आतिशे-दिल बुझा गए आँसू

उसकी ख़ुशियों की इंतिहा न रही
जब दुखी के मिटा गए आँसू

मीर का दर्द पीर मीरा की
चुटकियों में उड़ा गए आँसू

देखते ही व्यथा विसर्जन की
झील नदियों पे छा गए आँसू

द्रौपदी को 'कँवल' पता न चला
कृष्ण पर क्या न ढा गए आँसू

53.

मसअला कोई सरल हो ये कहाँ मुमकिन है
घर ग़रीबों का महल हो ये कहाँ मुमकिन है

शोख़ अदाओं का न छल हो ये कहाँ मुमकिन है
उनके माथे पे न बल हो ये कहाँ मुमकिन है

मुख्तलिफ़ राय के अफ़राद[1] इकट्ठे न हों जब
खिलना लाज़िम न कँवल हो ये कहाँ मुमकिन है

अब हुकूमत है नयी, तोहफ़ा में गीता लीजे
गिफ़्ट अब ताजमहल हो ये कहाँ मुमकिन है

एक से एक मिले मुल्क को रहबर अब तक
राहबर कोई 'अटल' हो ये कहाँ मुमकिन है

अब कहाँ कहते हैं इस दौर के उस्तादे-ग़ज़ल
मीर-सी कोई ग़ज़ल हो ये कहाँ मुमकिन है

पेड़-पौधे, न कोई छाँव, न बारिश, न घटा
रास्ते में कहीं नल हो ये कहाँ मुमकिन है

कर्म कीजे कि यही आपके वश में है 'कँवल'
आपके हाथ में फल हो ये कहाँ मुमकिन है

---

1 व्यक्ति

54.

गमले में तुलसी जैसी उगाई है ज़िन्दगी
पूजा है, अर्चना है, दवाई है ज़िन्दगी

किस ने कहा कि रास न आई है जिंदगी
हद दर्ज़ा सादगी से निभाई है ज़िन्दगी

मोबाइलों से सिर्फ़ सजाई है ज़िन्दगी
हमने ये किस तरह से गँवाई है ज़िन्दगी

जब से हुआ है प्रेम की ज़ुल्फों में क़ैद वो
उसके लिए ग़मों से रिहाई है ज़िन्दगी

शर्तों पे अपनी सबको नचाती रही है ये
कब दोस्तों की मुट्ठी में आई है ज़िन्दगी

शोहरत की धूप हमको मयस्सर नहीं हुई
बरगद के नीचे हमने बिताई है ज़िन्दगी

उसके बदन की खुशबू समेटे हुए हूँ मैं
मेरी भी रूह में तो समाई है ज़िन्दगी

उस्ताद की नसीहते-पुर-मा'नी याद हैं
'अपने लिए नहीं है, पराई है ज़िन्दगी'

बाग़ों की तितलियों-सी लुभाती है ये 'कँवल'
ख़ुशियाँ हैं यानी ग़म से जुदाई है ज़िन्दगी

55.

इस दौर के भारत का अंदाज़ अनूठा है
अब रिश्ता अदालत का इंसाफ़ से टूटा है

जो बात नहीं शामिल क़ानून की पुस्तक में
उस पर ही सियासत ने इस देश को लूटा है

मस्ती थी, बहलते थे, सुहबत के उजालों में
अब कैसे बताएं हम क्यूँ साथ वो छूटा है

यौवन के दरीचों पर इतरा के वो यूँ बोले
अब फिर न कभी कहना इस शोख़ ने लूटा है

उस हुस्न सिफ़त दिलबर की ऐसी तमन्ना थी
'जब ज़ुल्फ़ संवारी है इक आईना टूटा है'

अफ़वाहों की शहज़ादी कहती है अदालत में
मैं वाक़ई झूटी हूँ, सब वाक़िआ झूटा है

अब सोचिए मंदिर या मस्जिद में 'कँवल' जाकर
चौराहे पे आकर क्यों सर आपका फूटा है

56.

मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली
गाँव ने दो गज़ की दूरी मान ली

आपदाओं में भी अवसर खोजना
यह कला भी देश ने पहचान ली

मास्क, सैनीटाइज़र बनने लगे
देश ने किट की चुनौती मान ली

ट्रेन मज़दूरों की ख़ातिर चल पड़ीं
बच्चों ने घर पर सुखद मुस्कान ली

शहर से जब सावधानी हट गयी
दारु ने लोगों की हाय जान ली

कुछ मसीहा जब गले मिलने लगे
मौत ने दहशत की चादर तान ली

थी क़यादत मोदी की जग को 'कँवल'
राह भारतवर्ष ने आसान ली

57.

तेरी यादों के दस्तावेज़ अल्बम से निकल आए
मेरी पलकों पे शबनम के दिए सौ बार मुस्काए

तमन्नाओं की बस्ती में अजब दहशत वबा की है
जो परदेसी है क्या खाए, रहे घर में तो क्या खाए

कमाई बंद की मालिक ने, घर से हो गए बेघर
चले जब लॉक डाउन में पुलिस ने डंडे बरसाए

न कोई ट्रेन, बस या ट्रक, चले सब गाँव को पैदल
सियासत ने अजब ढँग से सज़ाएँ दीं ग़ज़ब ढाए

नगर में वन्य पशुओं के क़बीले सैर को निकले
घरों कमरों में वहशत ख़ौफ़ के छतनार लहराए

हैं लटके चर्च, मंदिर, मस्जिदो-गुरुद्वारे पे ताले
कि ईश्वर, यीशु, गुरु, अल्लाह ख़फ़ा सारे नज़र आए

बदलकर रूप डॉक्टर नर्स थाने के जवानों का
मसीहा हॉस्पीटल में ये ख़ुद को सेवारत पाए

सभी गुरुद्वारों की है सेवाभावी रूप की शोहरत
ग़रीबों, दीन-दुखियों को ये गुरु लंगर बहुत भाए

लगे हैं मास्क चेहरों पर धुले हैं हाथ साबुन से
'कँवल' ने आज सैनीटाईजिंग के लाभ बतलाए

58.

बेटी पर सख्ती, बेटे को मस्ती के अधिकार मिले
नगरों, कस्बों और गाँवों को सीख में ये उपहार मिले

बालिग़ नाबालिग़ सब वहशी, तल्बा ज़ुल्म के मकतब के
औरत की अस्मत के लुटेरे बन के सरे-बाज़ार मिले

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, बेटी बसाओ के नारे
झूठ फ़रेब के गाँवों में फुसलाने के किरदार मिले

फ़ुर्सत के लमहात मिले तो रूठ गया जादू तन का
इक बिस्तर पर दो जिस्मों के बीच में खर-पतवार मिले

पटरानी बन कर पीड़ा ने घर घर पर अधिकार किया
सुख आराम के दाई नौकर बाहर के हक़दार मिले

देख नहीं सकते जिसको कोहराम मचाया है उसने
उसके आगे फ़ेल मिसाइल, एटम बम, हथियार मिले

मज़दूरों की रोटी-रोज़ी ग़ायब, भात मुहाल हुआ
पैदल, ट्रक या रेल के डिब्बों में बेबस घरबार मिले

मौत का मीटर, ख़ौफ़ की दहशत क़ाबू में आए न 'कँवल'
डॉक्टर हों या नर्स पुलिस, गुमसुम जग के व्यापार मिले

59.

दाल रोटी और दवाई के सिवा क्या चाहिए
लॉक डाउन में मेरे भाई भला क्या चाहिए

शर्ट टाई पैंट पहने कोई अब फ़ुर्सत कहाँ
अब नहाना खाना सोना है सखा क्या चाहिए

एक बिस्तर दो बदन माज़ी के ख्वाबे-दिलनशीं
घर है, टीवी, फ़ैन से बेहतर हवा क्या चाहिए

शाहराहों पर गली कूचों में बेहद शोर है
पागलों-सी चीख़ती ज़ालिम क़ज़ा क्या चाहिए

घर में रहिये, घर में ही महफ़ूज़ है यह ज़िन्दगी
घर से बाहर मौत है कहिये वबा क्या चाहिए

औरतें छल बल से बेबस हो गईं दालान में
मर्द की मर्दानगी ख़ुश है मज़ा क्या चाहिए

हमसे तो पूछी नहीं है ख़ैरियत उसने कँवल
आप से किसने कहा, किसने कहा क्या चाहिए

60.

फ़ाइव जी की ही चल रही है हवा
तेज़ रौ धुन में ढल रही है हवा

बदला बदला है नक़्शा गुलशन का
ख़ारो-ख़स को मसल रही है हवा

मदरसों का निज़ाम और चलन
बाद मुद्दत बदल रही है हवा

सोचती थी बुझा के दम लेगी
दीप जल उट्ठे जल रही है हवा

धूप का लुत्फ़ छत पे लेते हुए
रफ़्ता-रफ़्ता टहल रही है हवा

उसके बाज़ू में शोला है कोई
बर्फ़ पहने मचल रही है हवा

लग न जाए बदन में आग 'कँवल'
दिल का मौसम बदल रही है हवा

61.

तब्लीग़ी जमाती भला जाहिल नहीं होंगे
क्या लोग ये इंसान के क़ातिल नहीं होंगे

मस्जिद से अज़ाँ देंगे पुकारेंगे ख़ुदा को
लेकिन ये वतन के लिए हामिल[1] नहीं होंगे

अपनाएंगे हरगिज़ न जो महफ़ूज़ है दूरी
फैलायेंगे अफ़वाह ये कामिल नहीं होंगे

थूकेंगे हकीमों पे चलाएंगे ये पत्थर
तो क्यों भला हालात ये मुश्किल नहीं होंगे

ये छींटाकसी नर्सों पे नंगे हो करें जब
क्या दीप ये तहज़ीब[2] के ज़ाइल[3] नहीं होंगे

छुप जायें, इलाज और दवा को भी न निकलें
अहमक़[4] हैं गुनहगार ये आदिल[5] नहीं होंगे

इस्लाम के पैग़ाम से वाक़िफ़ ही नहीं ये
क्या आप 'कँवल' ऐसे में बिस्मिल नहीं होंगे

---

1 श्रमिक
2 संस्कृति
3 नष्ट
4 नासमझ
5 न्यायनिष्ठ

62.

मुहब्बतों के सफ़र में थकान थोड़ी है
तेरे बग़ैर ये मौसम जवान थोड़ी है

ये देश अम्न का नफ़रत महान थोड़ी है
तलाक देना ही मर्दों की शान थोड़ी है

तुम्हारा ख़ून तो शामिल नहीं गुलिस्तां में
लुटेरों के लिए हिंदोस्तान थोड़ी है

जो अपना घर न इसे समझे, तोड़ फोड़ करे
लगाए आग जो वह मेहरबान थोड़ी है

सिखाए रहना जो मिलजुल के है वही उर्दू
बग़ैर प्यार के शीरीं ज़ुबान थोड़ी है

लगाओ आग, चलाओ कहीं भी बम-पत्थर
'किसी के बाप का हिंदोस्तान थोड़ी है

रहो यहां पे तराना सुनाओ दुश्मन के
तुम्हारी क़ौम का कुछ इस पे ध्यान थोड़ी है

जो हम कहेंगे तुम उसका कहोगे ठीक उल्टा
तुम्हारी रूह में भारत की जान थोड़ी है

तुम्हारी नस्ल में ही बस जवां नहीं होते
जहाँ हो हिंसा वो हिंदोस्तान थोड़ी है

शिवाजी, तेग के, राणा के हम भी हैं वंशज
तुम्हारे ख़ून में ही ये उफ़ान थोड़ी है

अमित का मोदी का संकल्प रंग लाया है
रविश, कन्हैया, ओवैसी की तान थोड़ी है

रिवाजो-रस्मे-तमद्दुन[1] बचाए रखिए 'कँवल'
मुहब्बतों का चलन बदज़ुबान थोड़ी है

---

1 सांस्कृतिक परम्पराएँ

63.

मज़दूरों के लिए कोई लारी न आएगी
बस ट्रेन जैसी कोई सवारी न आएगी

कुछ फ़ासला हो, हाथ मिलाएं नहीं कभी
कोरोना जैसी कोई बिमारी न आएगी

शमसान क़ब्रगाह के मंज़र तबाह हैं
औलाद मैयतों पे तुम्हारी न आएगी

सरकारी हुक्म मानेंगे गर एहतियात से
तो देखिएगा मौत की आरी न आएगी

महफ़ूज़ घर में आप रहेंगे अगर 'कँवल'
मैं मुतमइन हूँ आपकी बारी न आएगी

64.

करोना ने जमकर मचायी तबाही
इलाही, इलाही, इलाही, इलाही

सभी को है फ़ुर्सत मिलन पे मनाही
है बेचैन मन बंद है आवाजाही

मिली महफ़िलों में उसे वाहवाही
तरन्नुम की मलिका से जिसने निबाही

लबों पर तबस्सुम[1] की कलियाँ सजी हैं
दिलों में मसर्रत[2] की है बादशाही

चमकता है सर पर सफ़ेदी का सूरज
मेरे बालों पर अब नहीं है सियाही

शबे-वस्ल होंठों पे है 'जाने दो' पर
'नज़र और कुछ दे रही है गवाही'

गुनाहों की मस्ती में हलचल मची है
कि ड्रग क्या पता लाए कितनी तबाही

---

1 मुस्कराहट
2 प्रसन्नता

बड़े लोग झुकते हैं मिलने की ख़ातिर
भरे है गिलासों को जैसे सुराही

'कँवल' इन दिनों फ़िक्रे-दहकाँ[1] में गुम हैं
दलालों में है ख़ौफ़े-ज़िल्ले-इलाही[2]

---

1 किसानों की चिंता

2 शासन (बादशाह) का भय

65.

अन्दर इक तूफ़ान सतह पर ख़ामोशी का पहरा था
आँखों में फ़नकारी, चहरे पर भोलापन ठहरा था

काँटों की हर एक चुभन मंज़ूर थी शातिर नज़रों को
जब पेड़ों की शाखों पर फूलों का रंग सुनहरा था

सूरज पर इल्ज़ाम था धूप उजाला बांटते रहने का
तारीकी ने उसे डुबोया जहाँ समंदर गहरा था

डूबने वाले के हाथों में हाथ अपना पकड़ाना मत
अपनी हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा बचपन का एक ककहरा था

पहली बार मिले थे जब वे, रूप 'कँवल' था मनमोहक
लब, गेसू थे मस्त, अदाएँ दिलकश, बदन छरहरा था

66.

उसकी सारी ख़ूबियाँ ख़ुद जलवागर करता रहा
उसके ख़्वाबों से मैं नींदें तरबतर करता रहा

हो गया एहसास जब बाक़ी रहा कुछ भी नहीं
दस्तख़त पर दस्तख़त मैं बेहुनर करता रहा

लमहा लमहा वो झलकता ही रहा स्क्रीन पर
मैं भी मोबाइल से उसको दरबदर करता रहा

ख़त मुसलसल उसको लिखने की मेरी आदत रही
दिल के डेटाबेस में वह उनको घर करता रहा

ख़्वाहिशों की किरचियां आँखों में चुभती थीं 'कँवल'
ज़िक्र हाये दर्दे-उल्फ़त हमसफ़र करता रहा

67.

जामुन की शाख़ पर कभी झूला न डालिए
उस महजबीं के प्यार को दिल से निकालिए

तक़रीरे-इन्तख़ाब[1] हक़ीक़त से दूर हैं
इन लीडरों के वादों को हँस कर ही टालिये

सूरज की लालिमा में अँधेरों का ख़ौफ़ है
सुहबत से इनकी जल्द ही ख़ुद को निकालिये

ख़ुश फ़िक्र वादियों से गुज़रने के बाद ही
इन क़ाफ़ियों को ग़ज़लों के सांचे में ढालिए

तलवार की बिसात से बदली है रुत कहाँ
फ़रमान से ये फल तो दरख़्तों पे आ लिए

सौदा कभी करें न फ़ज़ीलत[2] का दोस्तो
चूल्हे पे सब्रो-ग़म के फ़ज़ीहत[3] उबालिए

हरगिज़ बुरे दिनों से न घबराइए 'कँवल'
ज़ेवर ज़मीर का किसी सूरत संभालिये

---

1 चुनावी भाषण
2 श्रेष्ठता/बड़प्पन
3 अपयश/अपमान

68.

इश्क़ का आँगन इधर गुलज़ार है
दर्द का लश्कर उधर तैयार है

हर तरफ़ जब लूट का बाज़ार है
होश में रहिये यही दरकार है

पत्थरों की ज़द में आता ही नहीं
आजकल का आइना हुशियार है

एक मिसरा क्या ज़रूरत का पढ़ा
सामने एहसान का अख़बार है

क़ाफ़ियों मिसरों की जब तज़ईन[1] हो
फिर तग़ाज़्ज़ुल ज़ीनते-अशआर[2] है

आलमे-मस्ती का मौसम देखकर
झूमता गाता मेरा दिलदार है

मन मुताबिक़ एप डाउनलोड हैं
हुबहू दिखता कहाँ किरदार है

फूल से ख़ुशबू जुदा करने की ज़िद
रायगाँ है, कोशिशे-बेकार है

ख़ूबसूरत है यक़ीनन ज़िन्दगी
हाँ! 'कँवल' को ज़िन्दगी से प्यार है

---

1 श्रृंगार साज-सज्जा

2 शे'र की शोभा

69.

ज़हन की शाख पर ख़्वाब फलते रहे
वो दरीचे पे दिल के टहलते रहे

हमसफ़र बन के तुम साथ चलते रहे
देख कर ये जहाँ वाले जलते रहे

हौसलों के दिए रख हथेली पे हम
डगमगाते रहे और सँभलते रहे

बन के सूरज रहे हार मानी नहीं
रोज़ उग़ते रहे, रोज़ ढलते रहे

रूह को चैन फिर भी नहीं मिल सका
जिस्म की हम रिदाएँ बदलते रहे

तय नहीं कर सके क्या करें क्या नहीं
फ़ैसले हुक्मरानों के टलते रहे

अब सड़क पर ही आईन बनने लगा
सांसद देश के हाथ मलते रहे

मुफ़लिसों को 'कँवल' घर नहीं मिल सका
मौसमों-से ठिकाने बदलते रहे

70.

ज़िन्दगी में मेरी ताज़गी आ गयी
दूर अँधेरा हुआ, रौशनी आ गयी

जब करोना की सूई भली आ गयी
देश में फिर नयी ज़िन्दगी आ गयी

माह मौसम कलेंडर बदलते रहे
जब दिसम्बर गया, जनवरी आ गयी

आप दाखिल हुए ज़िन्दगी में मेरी
हर तरफ़ सहने-दिल में ख़ुशी आ गयी

ज़िद की चादर, अना की रिदा ओढ़कर
ठण्ड में भीड़ की बेबसी आ गयी

पेड़ काटे, पहाड़ों का सौदा किया
क़ुदरती क़हर पर बरहमी आ गयी

चाँद से गुफ़्तगू प्यार की हो सके
सोच कर बाग़ में चाँदनी आ गयी

ख़ुशबुओं के चमन फिर सँवरने लगे
सहने-गुलशन में फिर ताज़गी आ गयी

रात-दिन चैन से मेरे कटने लगे
ज़िन्दगी में 'कँवल' वो ख़ुशी आ गयी

71.

वो जो घर था, तुम से ही था वो घर, तुम्हें याद हो कि न याद हो
तुम्हें ढूंढती रही हर नज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

जो बढीं कभी ये उदासियाँ, तुम्हें देखते ही पलट गयीं
थे तुम्हीं से खुश मेरे बामो-दर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

जो क़बा थी दिल पे निखर गयी, जो रिदा थी तन पे सँवर गयी
थे तुम्हीं ख़ुमारे-दिलो-नज़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हीं ज़िन्दगी के चढ़ाव थे तुम्हीं ज़िन्दगी के पड़ाव थे
था तुम्हारा जल्वा ही कारगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

मुझे लग़्ज़िशों पे गुमान था, मेरी ज़द में सारा जहान था
मेरे साथ थे तुम्हीं हमसफ़र, तुम्हें याद हो कि न याद हो

न फ़िज़ाओं में है चमक दमक न हवाओं में कोई ताज़गी
था वक़ार तुमसे ही जल्वागर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

वही ज़हर में सना आसमां, वही इस ज़मीन की मुश्किलें
तुम्हीं इक थे राहते-दिल मगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हें मैं अगर न मना सका कि जो रूठने पे ही आए तुम
मुझे याद अपना है ख़ौफ़-डर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

तुम्हीं दिल के चैन क़रार थे, कि तुम्हीं तो जाने-बहार थे
अभी कल की बात है सब मगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी झेंप जाते थे उस घड़ी, जो लगा के चेहरे पे टकटकी
तुम्हें देखता था मैं आँख भर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

मेरी इल्तिज़ा वो गुजारिशें, वो 'कँवल' की अदना सी ख्वाहिशें
चले मस्तियों की डगर डगर, तुम्हें याद हो कि न याद हो

72.

उसे शुहतों की हवा लगी, तभी चार दिन में बहक गया
ज़रा छप गया जो इधर उधर, सरे-आम राह भटक गया

सरे-शाम आया अँधेरे में, मेरे बाजुओं में दमक गया
किसी भीनी भीनी सुगंध से, मेरे मस्त दिल में महक गया

किया साँसें ख़ुशबू से तर ब तर, ढली रात पल में सरक गया
गो अँधेरी रात में आया था, मेरी चौखटों पे चमक गया

उसे सच की खुरदरी चादरों, में सुकून-चैन मिला नहीं
तभी झूठ से सजे मखमली, किसी पैरहन में अटक गया

न थकेगा, कहता था जो कभी, मेरा साथ जम के निभाएगा
'अभी दो क़दम भी चला न था मेरे साथ साथ कि थक गया'

किसे इस चुनाव के दौर में, मिले शोरो-ग़ुल से निजात जब
गली कूचों में किसी सिम्त से, जो जुलूस कोई टपक गया

न पयाम, ख़त न ही अर्ज़ियाँ, न तो फ़ोटो भेज मेरे लिए
मेरा फ़ेसबुक से है दिल भरा कि मैं व्हाटसप से भी थक गया

वो उसूल पर न खरा रहा, वो क़ुबूल भूल न कर सका
मेरे होंठ हँसते रहें सदा, इसी चाह में वो छलक गया

कभी डीपी ज़ूम करे है वो कभी फ़ोटो चूमे, हँसे कभी
ये 'कँवल' पे तारी है कौन जो, उसे ले के सू-ए-फ़लक गया

73.

वो रह-रह के अब याद आने लगे हैं
'जिन्हें भूलने में ज़माने लगे हैं'

मेरी कामयाबी ज़रूरत है जिनकी
वो राहों से पत्थर हटाने लगे हैं

उन्हें पड़ गया है कोई काम शायद
मुझे दोस्त कह कर बुलाने लगे हैं

अदालत से है अब नहीं ख़ौफ़ कोई
सड़क पर ही जज मारे जाने लगे हैं

मेरी सोच का क़ाफ़िला सोचता है
ये एहसास क्यूँ कुलबुलाने लगे हैं

तलब है जिन्हें आज शीरीं ज़ुबां की
वो उर्दू को दिल से लगाने लगे हैं

गिरफ़्तार ग़ज़लों की ख़ुशबू में हैं जो
वो अब नागरी आज़माने लगे हैं

'कँवल' आरज़ू के झमेले में पड़ कर
तमन्ना की महफ़िल सजाने लगे हैं

74.

रेत में कोई धार पानी की
है कहानी सराय-फ़ानी की

ख़ुदकशी के मुक़ाम से मैंने
ज़िन्दा रहने की तर्जुमानी की

उनकी गलियों से बेसबब गुज़रा
रायगाँ मैंने ज़िन्दगानी की

झूठ के पाँव थे उखड़ने पर
हार कर उसने हक़ बयानी की

हौसलों के महल हुए वीराँ
आग मद्धम हुई जवानी की

कोई राजा न कोई रानी है
कुछ अलग बात है कहानी की

क़ौल की है बहार जलसों में
बात है सिर्फ़ गुलफ़िशानी की

कुछ न रक्खा ख़याल सेहत का
दूरियों की न क़द्रदानी की

मैं 'कँवल' से निबाहता कैसे
तल्ख़तर उसने ख़ुशबयानी की

75.

शुक्रिया
दिलरुबा

आपने
ग़म दिया

कौन हूँ
क्या पता

कुछ बता
क्या हुआ

हो गया
रतजगा

कह उठे
तख़्लिया

चल पड़ा
क़ाफ़िला

मुझमें है
वह बसा

मैं 'कँवल'
हँस पड़ा

76.

मौन हो
तो सुनो

कुछ कहो
कुछ करो

खिड़कियाँ
खोल दो

ख़ुद में ही
मत जियो

अज़्म इक
दिल में हो

नफ़रतें
मत करो

दोस्ती
अब करो

धर्म पर
मर मिटो

रौशनी
बन चलो

77.

हट उधर चल
अब न तू छल

धूप है तो
ढूंढ बादल

गर्मियों में
तू पिला जल

प्यार से कह
मत लगा बल

हिन्दुओं के
देश से चल

आज जो है
वह नहीं कल

फ़िल्म अपनी
देखने चल

अब न होगा
मसअला हल

इस गली से
चल 'कँवल' चल

78.

न चुप रह
न दुख सह

ख़ुशी की
कथा कह

उदासी
अलग रह

पहाड़ों
पे चल रह

सवेरे
की चहचह

बताओ
कहाँ वह

'कँवल' सुन
ग़ज़ल कह

79.

चले आओ
न अब जाओ

मुहब्बत है
तो मुस्काओ

मेरे सँग़ तुम
हँसो गाओ

सलीक़े से
उसे पाओ

उसे पा कर
न इतराओ

सियासत से
तो बाज़ आओ

ग़ज़ल क्या है
न समझाओ

80.

मेरे हमसफ़र
मेरी बात कर

न भटक अभी
तू इधर-उधर

करो गुफ़्तगू
सरे-रहगुज़र

ये हयात है
बड़ी मुख़्तसर

कड़ी धूप है
न कोई शजर

रहे-इश्क़ है
बड़ी पुरख़तर

है 'कँवल' ग़ज़ल
तेरी पुर असर

81.

चल बात कर
नाहक़ न डर

घुसपैठिये
हैं देश भर

आओ रखें
अरि पर नज़र

सब कुछ नहीं
आकाश पर

इतरा न तू
कुछ बात कर

धरती को तू
बंजर न कर

पत्थर चले
हनुमान पर

महंगाई ने
तोड़ी कमर

सूरज 'कँवल'
जलता नगर

82.

करुं न गिला
ये तू ने कहा

कहीं न छुपा
कहीं न गया

मिली न दवा
न की ही दुआ

नज़र से गिरा
ये किस ने कहा

सिहर गया मैं
जो उस ने छुआ

जो खिड़की खुली
तो आई हवा

न दिल से निकल
'कँवल' ने कहा

83.

फ़िक्र मेरी ले के शुहरत पा रहा है
मेरी ग़ज़लें बज़्म में वह गा रहा है

'मीर' 'ग़ालिब' हम-तसव्वुर लग रहे हैं
वो तरन्नुम पर बदन लचका रहा है

शीरीं उर्दू से रची है उसकी ख़ुशबू
वह क़रीने से ग़ज़ल समझा रहा है

हादिसों की जर्बे-पैहम सोचती हैं
क्यों न उनसे दिल संभाला जा रहा है

अब फ़िज़ाओं में कहाँ वह बात है जो
इन घटाओं का बदन लहरा रहा है

लग्ज़िशों की बारिशें थमने पे आईं
बांहों का छाता निकाला जा रहा है

जब 'कँवल' मुहलत सज़ाओं ने उसे दी
वह ख़ताओं के अलम लहरा रहा है

84.

होंठों पर पहरे हैं
कुछ ख़्वाब सुनहरे हैं

गूंगों की हिफ़ाज़त में
हाकिम सब बहरे हैं

अफ़वाह की शहजादी
के रंग सुनहरे हैं

क़ातिल की हवेली पर
इंसाफ़ के पहरे हैं

हसनैन हुसैन हसन
इस्लाम के चेहरे हैं

गोविन्द शिवाजी तो
हिंदुत्व पे ठहरे हैं

तारीख़ के पन्नों पर
साजिश के ककहरे हैं

न गवाह 'कँवल' बनना
जल्लाद के पहरे हैं

85.

तन की हसरत में अब उबाल नहीं
मन को इसका कोई ख़याल नहीं

अब नयन मस्तियों के ताल नहीं
सुर्ख होते हैं उनके गाल नहीं

पास रह कर भी दूर हैं मुझसे
पहले होता था ऐसा हाल नहीं

अश्क आँखों में अब नहीं आते
अब लबों पर कोई सवाल नहीं

अब हवेली है दिल की अफ़सुर्दा
इसमें होता कोई वबाल नहीं

ख़्वाहिशों की दुल्हन हुई बेवा
इसकी सज-धज पे है ज़वाल नहीं

जो भी अच्छा लगे तू फ़ौरन कर
आज की बात कल पे टाल नहीं

जान लेने पे हैं तुले सारे
किसी मज़हब को अब मलाल नहीं

है तबो-ताब अब भी सज-धज में
अब भी उनकी 'कँवल' मिसाल नहीं

86.

ठोकर में डाल कर ये ज़माने की दौलतें
मैं छोड़ आया दूर वज़ारत की शोहरतें

बारिश की रात में कोई दहका गया मुझे
चिंगारियां बनी है अभी उसकी चाहतें

कमज़ोर होगा ऐसे ही भारत महान ये
हमको लड़ाने पे तुलीं बैरूनी ताक़तें

सच है कि उनके साथ रहे उम्र भर मगर
मुझको कभी भी भायीं नहीं उनकी आदतें

उनकी निगाह में था ज़रो-माल अशर्फ़ी
मुझको पसंद आईं फ़क़ीरों की सोहबतें

कैसे किताबे-दिल पढ़े कोई भी कम नज़र
नूरानी कैफ़ से हों बड़ी जब ज़रूरतें

था हौसला बुलंद हर इक सूबे में 'कँवल'
अब फ़ौज में भी आ गयीं भारत की औरतें

87.

दस्ते-क़ातिल बेहुनर है आजकल
मुफ़्लिसों के तन पे सर है आजकल

मुंसिफ़ों को है समाअत से गुरेज़
फ़ैसला सब बेअसर है आजकल

अब नहीं होता कहीं दंगा फ़साद
वाक़ई शासन का डर है आजकल

जबसे चौकीदार है बदला गया
अम्न की मस्ती में घर है आजकल

अब किसी को दे नहीं कोई पनाह
ताक में कोई शरर है आजकल

हम फ़क़ीरों का है बस वो आसरा
उसकी रहमत पर नज़र है आजकल

आजकल हम से जुदा हैं वो 'कँवल'
सूनी-सूनी रहगुज़र है आजकल

88.

कौन चाहेगा तुम्हें आफ़ात में
सूर्य भी दिखता नहीं बरसात में

क्या रखा है माज़ी के लमहात में
सोचिये फ़र्दा के सद सफ़हात में

मौत पर तो थे मनाते जश्न तुम
डर रहे क्यों मौत के सदमात में

एक अदना वायरस का शुक्रिया
मौत का है ज़ायक़ा ख़ैरात में

मुल्क में ग़द्दार चांदी काटते
तीर भाला ले के हैं सब घात में

अक़्ल ने जब कोई सुध मेरी न ली
मुड़ गया तेरी तरफ़ जज़्बात में

आस्तीं में साँप मत पालो 'कँवल'
नेवलों को दो इन्हें सौग़ात में

89.

पहरे मंदिर पर देखो
ईश्वर में भी डर देखो

झूठ मगन है झूले पर
सच पर है ख़ंजर देखो

अब हनुमान जुलूस पे भी
बरस रहे पत्थर देखो

ख़ौफ़ दिलों में भरने को
सड़कों पर लश्कर देखो

अफ़वाहों से शहर गली
वहशत का मंज़र देखो

बाहर ख़ून ख़राबा है
चर्चा में कुछ घर देखो

सरकारों ने खोल दिया
राहत का दफ़्तर देखो

साज़िश करने वालों की
छत पर हैं पत्थर देखो

सुधरेंगे ये लोग 'कँवल'
दिल में भर कर डर देखो

90.

जी हुजूरी करो
हर ख़ुशी मुफ़्त लो

द्वार पर शान से
मुस्कुराओ, हँसो

जुस्तजू अम्न की
ख़ुद में करते रहो

कौन मुझसे बड़ा
इस पे झगडा न हो

मस्जिदों से अज़ाँ
शोर है मत कहो

घंटियाँ मंदिरों
में बजा ख़ुश रहो

ये नयी नस्ल है
पत्थरो! चल पड़ो

तर्बियत ख़ूब है
मन में नफ़रत भरो

कैसी तालीम है
कार पंक्चर करो

हौसला हो अगर
जामे-ग़म फेंक दो

मौसमों से 'कँवल'
मत गुज़ारिश करो

91.

प्रश्न हूँ मैं, हल नहीं हूँ
रास्ता समतल नहीं हूँ

जींस में जाती हूँ दफ़्तर
रेशमी आँचल नहीं हूँ

बंद बोतल का हूँ पानी
शुद्ध गंगा जल नहीं हूँ

हाँ मैं हूँ मुश्किल घड़ी हाँ
कोई आसाँ पल नहीं हूँ

ब्लैक में मिल जाऊँगी मैं
शॉप में पागल! नहीं हूँ

अब कहाँ नज़रों में मस्ती
ज़ुल्फ़ का बादल नहीं हूँ

भावनाओं में बहो मत
दिल में हूँ, हलचल नहीं हूँ

कौन बुलडोज़र से उलझे
योगियों का बल नहीं हूँ

कौन समझाए 'कँवल' को
मैं ध्वनि करतल नहीं हूँ

92.

आँखों से जब दूर हुआ
दिल ये चकना चूर हुआ

कुछ ऐसा मसरूफ़ रहा
रिश्ता हर बेनूर हुआ

घर के भीतर देख उसे
इक चेहरा रंजूर हुआ

झुक कर मिलता था सबसे
बन्दा जो मशहूर हुआ

शोहरत, दौलत, इज्ज़त पा
मुख़लिस से मग़रूर हुआ

दफ़्तर आंधी पानी में
जाने को मजबूर हुआ

देश में हिन्दू मुस्लिम को
लड़वाना दस्तूर हुआ

शक की बस्ती मौज में है
मज़हब प्रेम से दूर हुआ

देख पडोसी की मस्ती
यार 'कँवल' मसरूर हुआ

93.

जब से वो बाज़ार गया
ख़्वाहिश का बाज़ार सजा

चलते हैं तफ़रीह को हम
लो अब शोपिंग माल खुला

अपनी ज़रुरत हमसे अधिक
टीवी विज्ञापन को पता

भाषा पढ़ इमोजी की
लिखने की ज़हमत न उठा

फूल के दिन मसरूफ़ बहुत
रात में लें खिलने का मज़ा

दिल की सब बातें कह दीं
बेअदबी का अलग मज़ा

'मीराबाई चानू' ख़ुश
सिल्वर मैडल 'कँवल' मिला

94.

हमने सुख निर्यात किया
पर आँसू आयात किया

सन्नाटे हैं आँखों में
दिन को हमने रात किया

सुन्दर विश्व बनाने को
रामायण निर्यात किया

तुलसी की चौपाई ने
हर रिश्ता विख्यात किया

दास कबीर की वाणी ने
हर रुढ़ी पर घात किया

स्पीकर सब उतर गए
प्रदूषण खैरात किया

ध्वनि सीमा कम करने को
कब कोई आफ़ात किया

धर्म सनातन वही 'कँवल'
जिस ने मन इस्पात किया

95.

बड़ी आसान क़िस्तों में चुका है
तमन्नाओं की बस्ती में रहा है

वफ़ा मजबूर लोगों की बना है
लिबासे-बेबसी में दीखता है

दवाओं की तिजारत कर रहा था
दुआओं की हिफ़ाज़त पर टिका है

बला की चन्द साँसों से उलझ कर
बदन अकड़न की सरहद पर रुका है

किया है जिस्म मुंशी के हवाले
किसी को भात पानी तब मिला है

जमी है पाउडर की पर्त रुख पर
कहाँ आईने को ये सब पता है

'कँवल' आसां हुआ है पद्मश्री अब
सभी को ऑनलाइन मिल रहा है

96.

दीवारों में दर होता है
हर घर में अक्सर होता है

खिड़की रोशनदान की ज़द में
बाहर का मंज़र होता है

गागर भव सागर में जब हो
जल अंदर बाहर होता है

अणु से भिन्न नहीं परमाणू
दरिया में सागर होता है

छाती पर युक्रेन के हरदम
रसिया का लश्कर होता है

कौन मुखौटे से वंचित है
हर रुख़ पर अस्तर होता है

इतने ऐप हसीं दिखने के
बदचेहरा बेहतर होता है

कौन 'कँवल' को समझाए अब
मंज़िल हो तो सफ़र होता है

97.

भूल जाओ गया सो गया
अब संभालो बचा जो बचा

चाँदनी को चलो ओढ़ लें
चाँद ग़म का उगा तो उगा

कितना आबाद यह दश्त है
घर वो वीरां पड़ा तो पड़ा

आओ सस्ते में बिक जाएं हम
शहर महंगा हुआ तो हुआ

मंज़िलों को ख़बर कीजिये
रास्ता नम दिखा तो दिखा

दोस्ती क्यूँ समझ लूं इसे
मिलना-जुलना हुआ तो हुआ

मुझमें रहने लगा वो 'कँवल'
उसका दफ़्तर लुटा तो लुटा

98.

दर्द की धुन पर ग़ज़ल है
सुरमई आँखों में जल है

गुमशुदा लमहों का पल है
भावना व्यापक प्रबल है

दिल मेरा व्याकुल है कितना
यह जुदाई का अनल है

भंग करने को तपस्या
मेनका अब तक विकल है

एक विश्वामित्र जैसा
कल्प है तो इंद्र छल है

इत्र के वातावरण में
मित्र अनुकम्पा सबल है

कल्पना 'नीतीश' जी की
देखिये हर घर में नल है

ख़ुद को जब सौंपा तो जाना
साधना कितनी सफल है

मैं उसे पढता हूँ पहरों
वो मेरे दिल का 'कँवल' है

99.

मुझको निहारते रहे सामान की तरह
कुछ लोग घर पे आए थे मेहमान की तरह

सहमी हुई वो जिंस बनी थी दुकान में
सब देखते रहे उसे गुलदान की तरह

रस्मो-रिवाज से कभी ग़ाफ़िल कहाँ हुआ
उसमें कशिश थी मीर के दीवान की तरह

इक दायरे में क़ैद मुझे करने जब लगे
मैं क़हर बन गया किसी तूफ़ान की तरह

क़ुर्बत की होड़ मच गई महफ़िल में हर तरफ़
जोड़े में सुर्ख़ आया वो ऐलान की तरह

जितनी भी ने'मतें हैं सभी दस्तयाब हैं
सच है न माह कोई है रमज़ान की तरह

रिश्तों की अज़मतों की बड़ी क़द्र थी 'कँवल'
दुख हो कि सुख, वो साथ रहा जान की तरह

100.

एक पल नहीं लगता उनको रूठ जाने में
हमको पहरों लगते हैं फिर उन्हें मनाने में

कुछ भला कहाँ होता दिल कहीं लगाने में
फ़ायदा नहीं पर ये तजरुबा बताने में

बेधड़क चला आए हिज्र वो हक़ीक़त है
यार देर लगती है वस्ल को बुलाने में

आप का तो वादा था बात दिल में रक्खेंगे
खुल गयी बताओ फिर, क्या मज़ा छुपाने में

सर बलंद होकर भी वो बहुत पशेमां थे
साज़िशों की दुलहन थी मेरा सर झुकाने में

जब मुआवज़ा लेने हुक्मरान हाज़िर हों
चैन कैसे पाएं वो बस्तियां जलाने में

आबरू किसी की भी लुट न जाए बेमतलब
सहमे-सहमे रहते हैं सब यतीमख़ाने में

आंसुओं की महफ़िल में हुक्म था हँसो गाओ
मुश्किलों का मौसम था लब पे मुस्कुराने में

मौन को मिला ज़िम्मा तर्जुमान करने का
दर्दो-ग़म 'कँवल' बेबस ख़ुश हुए लजाने में

नज़्म: ऋतुओं का है राजा बसंत

सर्दी का अब हो गया अंत
खुशियाँ लेकर आया बसन्त

अमवारी में फैली सुगंध
बागों में मनमोहक प्रबंध

मकरंद पुष्प दल से बरसे
तितली का मन अब क्यों तरसे

सरसों खेतों में फूल रहीं
आमों में बौरें झूल रहीं

भंवरें करते गुंजार यहाँ
तितली से मस्त बयार यहाँ

बाग़ों में पंछी शोर करे
नर्तन चित का मनमोर करे

सूरज की किरण अब मादक है
कोयल की कुहुक सम्मोहक है

खेतों में हरियाली छाई
कृषकों को बेहद ऋतु भाई

भौंरे गायें नित नया गान,
कोयल छेड़े है कुहुक तान

अंगडाई लेती जवानी है
आँखों में मस्त कहानी है

ऋतु यह बेहद मस्तानी है
हर शाम यहाँ की सुहानी है

इस सुख का हो अब नही अंत
ठहरे घर-घर में नित वसंत।

शोभा इसकी है दिग दिगंत
ऋतुओं का है राजा बसन्त

'इतराती बलखाती ग़ज़लें' की ग़ज़लों की बह्रें और उनके अर्कान

1. **बह्र: बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन सालिम**
   अर्कान: फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
   राम जै राम जै राम जै राम जै
   ग़ज़ल-07 कुर्सियाँ हैं कहाँ फैला अख़बार है
   ग़ज़ल-08 शह्र से लाज का अपहरण हो गया
   ग़ज़ल-69 ज़हन की शाख पर ख्वाब फलते रहे
   ग़ज़ल-70 ज़िंदगी में मेरी ताज़गी आ गई

2. **बह्र: बह्रे-मुतदारिक मुसद्दस सालिम**
   अर्कान: फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
   राम जै राम जै राम जै
   ग़ज़ल 22 मौज में आज थी जलपरी
   ग़ज़ल-29 हौसलों के नगर में रहे
   ग़ज़ल-38 फ़्लैट पर धूप आती नहीं
   ग़ज़ल-97-भूल जाओ गया सो गया

3. **बह्र: बह्रे-मुतदारिक मुरब्बा सालिम**
   अर्कान: फ़ाइलुन फ़ाइलुन
   राम जै राम जै
   ग़ज़ल 47 जिस तरफ़ सब गए
   ग़ज़ल-90 जी हुज़ूरी करो

4. बह्र: बह्र-ए-हज़ज मुसम्मन अश्तर मक़्फ़ूफ मक़्बूज़ मुखन्नक़ सालिमुलआख़िर।

अर्कान: फ़ाइलुन मफ़ाईलुन फ़ाइलुन मफ़ाईलुन

राम जै हरे रामा राम जै हरे रामा

ग़ज़ल 100 एक पल नहीं लगता उनको रूठ जाने में

5. बह्र: बह्रे-रमल मुसम्मन महज़ूफ़

अर्कान: फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

राम जै जै राम जै जै राम जै जै राम जै

ग़ज़ल-49 चार दिन की ज़िन्दगी में एक दिन भाया

ग़ज़ल-59 दाल रोटी और दवाई के सिवा क्या चाहिए

ग़ज़ल-66 उसकी सारी ख़ूबियाँ ख़ुद जलवागर करता रहा

6. बह्र: बह्रे-रमल मुसद्दस सालिम

अर्कान: फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन

राम जै जै राम जै जै राम जै जै

83 फ़िक्र मेरी ले के शुहरत पा रहा है

7. बह्र: बह्रे-रमल मुसद्दस महज़ूफ़

अर्कान: फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन

राम जै जै राम जै जै राम जै

ग़ज़ल 14 धर्म संसद में शुरू हुईं गालियाँ

ग़ज़ल-33 डूबने वालों में उसका नाम है

ग़ज़ल-56 मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली

ग़ज़ल-68 इश्क़ का आँगन इधर गुलजार है
ग़ज़ल 87 दस्ते-क़ातिल बेहुनर है आजकल
ग़ज़ल 88 कौन चाहेगा तुम्हें आफ़ात में

8. **बह्र: बह्रे-रमल मुरब्बा सालिम**
अर्कान: फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन
राम जै जै राम जै जै
ग़ज़ल-91 प्रश्न हूँ मैं हल नहीं हूँ
ग़ज़ल 98 दर्द की धुन पर ग़ज़ल है

9. **बह्र: बह्रे-रमल मुरब्बा महज़ूफ़**
अर्कान: फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
राम जै जै राम जै
ग़ज़ल 17 रंग उसका उड़ गया
ग़ज़ल 23 दोस्त आओ तो सही
ग़ज़ल 24 आपका जो ख़त पढ़ा
ग़ज़ल 25 ऑनलाइन ग़म दिखा

10. **बह्र-ए-रमल मख़्बून महज़ूफ़/महज़ूफ़ मुसक्कन/मक़्सूर/मक़्सूर मुसक्कन।**
फ़ाइलातुन/फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन
फ़इलुन/फ़ेलुन/फ़इलान/फ़ेलान।
राम जै जै/भ ज रामा/भ ज रामा/रामा
ग़ज़ल 35. कैसी बंदिश है कोई भी पस-ए-मंज़र न लिखे

ग़ज़ल 51 अब कोई वहशतो-दहशत के ये मंज़र न लिखे
ग़ज़ल 53 मसअला मुल्क का हल हो ये कहाँ मुमकिन है

11. बह्र: बह्रे-मुत्क़ारिब मुसम्मन सालिम
अर्कान: फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन
हरे जै हरे जै हरे जै हरे जै
ग़ज़ल 64 करोना ने जमकर मचायी तबाही
ग़ज़ल-73 वो रह-रह के अब याद आने लगे हैं

12. बह्र: बह्रे-मुत्क़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़
अर्कान: फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
हरे जै हरे जै हरे जै हरे
ग़ज़ल 20 समुन्दर में बेचैन हैं मछलियाँ
ग़ज़ल 26 घटा कर वो क़ीमत बताता रहा
ग़ज़ल 37 जिसे हमने फेंका उठाया भी है

13. बह्र: बह्र-ए-मुक़्तज़ब मुसम्मन मख़्बून मर्फ़ूअ, मख़्बून मर्फ़ूअ मुसक्कन (सोलह रुक्नी)
फ़ऊलु फ़ेलुन फ़ऊलु फ़ेलुन फ़ऊलु फ़ेलुन फ़ऊलु फ़ेलुन
अ रा म रामा अ रा म रामा अ रा म रामा अ रा म रामा
ग़ज़ल 02 मैं अपने होंठों की ताज़गी को तुम्हारे होंठों के नाम लिख दूँ
ग़ज़ल 05 तुम्हारे लफ़्ज़ों को भावनाओं की पालकी में बिठा रहा हूँ
ग़ज़ल 09 सवाल आँखों से कर रहा हूँ, जवाब पलकों से दे रही है

14. बह्र-बह्र-ए-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़/महज़ूफ़ मुसक्कन/मक़्सूर/मक़्सूर मुसक्कन

फ़ाएलातुन/फ़एलातुन मफ़ाएलुन फ़एलुन/फ़ेलुन/फ़एलान/फ़ेलान

राम जै जै/भज रामा/हरे हरे/भज रे

ग़ज़ल-01 छोड़ कर यह गयीं जहाँ फ़ानी

ग़ज़ल 11 रात दिन उसको सोचना क्या है

ग़ज़ल 12 गुलबदन पर निख़ार का मौसम

ग़ज़ल 15 हर जगह उनका नाम है साहिब

ग़ज़ल-31 आँख से कुछ छुपा नहीं रहता

ग़ज़ल 40 आग-पानी के आस-पास रही

ग़ज़ल 43 लफ़्ज़ बरते गए सलीक़े से

ग़ज़ल 74 रेत में कोई धार पानी की

ग़ज़ल 85 तन की हसरत में अब उबाल नहीं

15. बह्र: बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन मख़्बून मुसक्कन

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन

रामा रामा रामा रामा

ग़ज़ल 96-दीवारों में दर होता है

16. बह्र: बह्र-ए-मुतदारिक मुसद्दस मख़्बून मुसक्कन

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन

रामा रामा रामा

ग़ज़ल 84 होंठों पर पहरे हैं

17. बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन मख़्बून मुसक्कन मह्ज़ूज़

अर्कान: फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ा

रामा रामा रामा जै

ग़ज़ल-93 जब से वो बाज़ार गया

ग़ज़ल 16 रिश्तों को मिस्मार किया

ग़ज़ल 18 जलसों में झूठा बोले

ग़ज़ल 28 आँखों से स्कैन किया

ग़ज़ल-30 मौत की दहशत छाई है

ग़ज़ल 41-पलक झुका कर हामी भर

ग़ज़ल 89-पहरे मंदिर पर देखो

ग़ज़ल 92-आँखों से जब दूर हुआ

ग़ज़ल 94-हमने सुख निर्यात किया

18. बह्र: बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन मख़्बून मुसक्कन मत्मूस

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ाअ

रामा रामा रामा राम

ग़ज़ल-45 चाँद हुआ है रिश्तेदार

19. बह्र: बह्र-ए-मुतदारिक मुसम्मन मख़्बून मुसक्कन मह्ज़ूज़ मज़ाअफ़ (सोलह रुक्नी)

फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़ेलुन फ़े/फ़ा

रामा रामा रामा रामा रामा रामा रामा जै

ग़ज़ल 58 बेटी पर सख़्ती बेटे को मस्ती के अधिकार मिले।

ग़ज़ल 65 अन्दर इक तूफ़ान सतह पर ख़ामोशी का पहरा था

21. फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़ेलुन / फ़इलुन

2122 1122 22/112

ग़ज़ल 21 नाम यश डिग्री पता मान गए

22. बह्र: बह्रे–हज़ज मुसम्मन सालिम

अर्कान: मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन

हरे रामा हरे रामा हरे रामा हरे रामा

ग़ज़ल-32 मेरी ग़ज़लों की है रानी जो उसकी बात ही क्या है

ग़ज़ल-57 तेरी यादों के दस्तावेज़ अल्बम से निकल आए

23. बह्र:बह्रे-हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़ उल आख़िर

अर्कान: मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन फ़ऊलुन

हरे रामा हरे रामा हरे जै

ग़ज़ल-06 गगन धरती की मैं हलचल रहा हूँ

ग़ज़ल-27 उजाले बांटने फिर चल पड़े हैं

ग़ज़ल 39 मेरे सर की क़सम खाने लगा है

ग़ज़ल 95 बड़ी आसान क़िस्तों में चुका है

24. बह्र: बह्रे-मुजास मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़

मफ़ाइलुन फ़इलातुन मफ़ाइलुन फ़ैलुन

हरे हरे भज रामा हरे हरे रामा

1212 1122 1212 22

ग़ज़ल 36 दरख़्त फूल समर डाली शादमाँ देखूं

25. बह्र-ए-मुज्तस मख़्बून महज़ूफ़/महज़ूफ़ मुसक्कन/मक़्सूर/मक़्सूर मुसक्कन।
मफ़ाई-लुन फ़इलातुन मफ़ाई-लुन फ़इलुन/फ़ेलुन/फ़इलान/फ़ेलान।
हरे रामा/भज रामा/हरे रामा/भज रे
62 मोहब्बतों के सफ़र में थकान थोड़ी है।

26. बह्र:बह्रे-मुतक़ारिब मुसम्मन मक्बुज़ असलम
फ़ऊलु फ़ेलुन फ़ऊलु फ़ेलुन
अराम रामा अराम रामा
ग़ज़ल 13 तुम्हारी यादों का सिलसिला हो

27. बह्र: बह्रे-हज़ज मुसम्मन अख़रब
अर्कान: मफ़ऊल मफ़ाईलुन मफ़ऊल मफ़ाईलुन
जै राम/हरे रामा/जै राम/हरे रामा
ग़ज़ल 55 इस दौर के भारत का अंदाज़ अनूठा है

28. बह्र: बह्रे-हज़ज मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़ उल आख़िर
अर्कान: मफ़ऊलु मुफ़ाईलु मुफ़ाईलु फ़ऊलुन
जै राम/हरे राम/हरे राम/हरे जै
ग़ज़ल-48 ठुकराओगे तो सोच लो पछताओगे बेशक
ग़ज़ल-61.तब्लीग़ी जमाती भला जाहिल नहीं होंगे

29. बह्र: बह्रे–मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़
अर्कान: मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन
जै राम/राम राम/हरे राम/राम जै

ग़ज़ल 04 रिश्तों में पहले जैसी तमाज़त नहीं रही
ग़ज़ल 10 दिल का मकान ग़म ने किराये पे ले लिया
ग़ज़ल-19 हर शहर गाँव कसबे पे यूँ मेहरबां हुआ
ग़ज़ल-34 लमहाते-शाख़े-वक़्त ने क़ादिर बना दिया
ग़ज़ल 44 कर्फ़्यू लगा है रात में बाहर न जाइए
ग़ज़ल 46 बारिश में भीगते हुए पास आया चल दिया
ग़ज़ल-54 गमले में तुलसी जैसी उगाई है ज़िन्दगी
ग़ज़ल-63 मजदूरों के लिए कोई लारी न आएगी
ग़ज़ल-67 जामुन की शाख़ पर कभी झूला न डालिए
ग़ज़ल-86 ठोकर में डाल कर ये ज़माने की दौलतें
ग़ज़ल 99 मुझको निहारते रहे सामान की तरह

30. बह्र: बह्रे-कामिल मुसम्मन सालिम

अर्कान: मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन मुतफ़ाइलुन

11 212 11 212 11 212 11 212

भज राम जै भज राम जै भज राम जै भज राम जै

ग़ज़ल 71 वो जो घर था, तुम से ही था वो घर, तुम्हें याद हो कि न याद हो
ग़ज़ल 72 उसे शुहतों की हवा लगी, तभी चार दिन में बहक गया

31. बह्र: बह्रे-मुतदारिक मुसना सालिम

रुक्न: फ़ाइलुन

राम जै

ग़ज़ल-75 शुक्रिया
ग़ज़ल-76 मौन हो

32. बह्र: बह्रे-रमल मुसना सालिम

रुक्न: फ़ाइलातुन

राम जै जै

ग़ज़ल 77 हट उधर चल

33. बह्र: बह्रे-मुतक़ारिब मुसना सालिम

रुक्न फ़उलुन

हरे जै

ग़ज़ल: 78 न चुप रह

34. बह्र: बह्रे-हज़ज मुसना सालिम

रुक्न: मफ़ाईलुन

हरे रामा

ग़ज़ल 79 चले आओ

35. बह्र: बह्रे-कामिल मुसना सालिम

रुक्न: मुतफ़ाइलुन

भज राम जै

ग़ज़ल 80 मेरे हमसफ़र

36. बह्र: बह्रे-रजज़ मुसना सालिम

रुक्न: मुस्तफ़इलुन

रामा हरे

ग़ज़ल 81 चल बात कर

37. बह्र: बह्रे-वाफ़िर मुसना सालिम

रुक्न: मफ़ा इल तुन

हरे भज रे

ग़ज़ल 82 करूँ न गिला

यू ट्यूब पर ग़ज़लों और भजनों के वीडियो

गायक : डॉ. कमलेश हरिपुरी

ग़ज़लें :

1. आपका चेहरा मुझे भाने लगा
2. ख़ूबसरत लग चाँद कल
3. ग़म छुपाने में वक़्त लगता है
4. तू उधर था, इधर हो गया
5. नाम हूँ मैं, मेरा पता तुम हो
6. मुजरिमों से मिले रह गये
7. मुस्कुराने में वक़्त लगता है
8. मैं अपने होंठो की ताज़गी को तुम्हारे होंठों के नाम लिख दूँ
9. मैं समंदर हूँ मुझको नदी चाहिए

भजन

10. सरस्वती वंदना
11. गणपति वंदना
12. हनुमान वंदना
13. जय शिव शंभू कृपा करो
14. श्री राम जय राम जय जय राम
15. श्रीबलभद्र वंदना
16. श्री दुर्गा वंदना

श्रीरामभजन

17. श्रीराम तुम्हारा हम गुणगान सुनाते हैं

18. ख़त्म हुआ बनवास मनाओ उत्सव झूमो गाओ

गायक : डॉ. दुर्गेश उपाध्याय

19. अब कहाँ मधुमास अपने गाँव में
20. किसी के लिए आशिक़ी है मुहब्बत
21. गुज़रे मौसम का पता सुर्ख लबों पर रखना
22. तेरे ख़त जब भी मेरे नाम आए
23. श्रीरामभजन-लगा कर घोष जय श्री राम निकले

गायिका : बीना चटर्जी

ग़ज़लें

24. आप मेरे क़रीब आने लगे
25. मुक़द्दर का सूरज घटाओं में था

श्रीरामभजन

26. श्रीरामभजन श्री राम तुम्हारा हम गुणगान सुनाते हैं
27. श्रीरामभजन ख़त्म हुआ बनवास मनाओ उत्सव झूमो गाओ
28. श्रीरामभजन लौटे राम अयोध्या धाम

मतदाता जागरूकता गान

29. लोकतंत्र के महापर्व पर अपना फ़र्ज़ निभाएं

गायिका : रंजना झा

ग़ज़ल

30. मुस्कुराने में वक़्त लगता है

मुहब्बतों का शायर : रमेश 'कँवल'

नाम : रमेश प्रसाद,बि.प्र.से.(से.नि.)

जन्म तिथि : 25 अगस्त,1953

धर्मपत्नी : श्रीमती मंजू प्रसाद
(परिणय 22 जून1978)

अदबी ख़िदमात : 'कँवल' शाहाबादी नाम से पहली ग़ज़ल परवाज़, लुधियाना से अगस्त 1972 में प्रकाशित हुई|

प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह :

- लम्स का सूरज (उर्दू), सावन का कँवल (हिंदी) 1997 में
- शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में, रंग-ए –हुनर (उर्दू) 2016 में
- स्पर्श की चांदनी : काव्य संग्रह (ग़ज़ल नज़्म) 2019 में
- इतराती बलखाती ग़ज़लें : ग़ज़ल संग्रह 2024
- अमृत काल की आधुनिक ग़ज़लें : ग़ज़ल संग्रह 2024

सम्पादन 2020 में

- अक़ीदत के फूल : (ग़ज़ल नज़्म) 2020

संपादन 2021

- 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें : 600 ग़ज़लों का संकलन

संपादन-2022

- 21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें
- एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें

सम्पादन 2023

- अमृत महोत्सव की ग़ज़लें 75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें

- क्या सुनाएँ हाले-दिल-हफ़ीज़ बनारसी हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह
- आज फूलों में ताज़गी कम है-हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह
- वंदन ! शुभ अभिवंदन ! देव स्तुति की कविताओं का संग्रह

सम्पादन : 2024

- 24 बह्रों में 2024 की दिलकश ग़ज़लें

अन्य पुस्तकों में शामिल ग़ज़लें :

- रंगारंग शायरी (संपादक –प्रकाश पंडित),
- ग़ज़ल इंटर नेशनल (संपादक मंसूर उस्मानी)
- ग़ज़ल : दुष्यंत के बाद भाग 2 (संपादक दीक्षित दनकौरी)
- बिहार में जदीद ग़ज़ल (संपादक अताउल्लाह खां अल्वी)
- 101 किताबें ग़ज़लों की (संपादक नीरज गोस्वामी)
- संदल सुगंध भाग 4 (संकलित काव्य संग्रह) में पृष्ठ 33-38 पर ग़ज़लें
- हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज (संपादक अनिरुद्ध सिन्हा) पृष्ठ 92-98 पर ग़ज़लें
- 30 ग़ज़लगो 300 ग़ज़लें-डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति में ग़ज़लें शामिल
- ग़ज़ल त्रयोदश / उत्तरवाहिनी / अंडरलाइन इत्यादि ग़ज़ल विशेषांक में ग़ज़लें प्रकाशित

कविताकोश :

- www.kavitakosh.org पर 80 से ज़्यादा ग़ज़लें-गीत
- www.urduyouthforum.org पर 25 से ज़्यादा ग़ज़लें
- www.rekhta.org पर 10 से ज़्यादा ग़ज़लें
- 2 e-book 1 लम्स का सूरज (उर्दू), 2 रंग-ए –हुनर (उर्दू)

सम्प्रति :

- बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत
- (पटना में लगभग 3 साल तक ए डी एम लॉ एंड आर्डर रहे) के पश्चात
- सफ़ीर-ए-शहर-ए-शेर ओ अदब
- सदर : बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी,पटना : मरकज़-ए-रंग-ए-हुनर

निवास : 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड, जगदेव पथ, पटना-800014

मोबाइल : 878 976 1287

ई-मेल : rameshkanwal78@gmail.com

वेबसाइट : www.rameshkanwal.com